तृतीय अध्याय

परिवार का सैद्धांतिक विवेचन और विवेच्य कहानियों में परिवार का स्वरूप

मानव जाति ने अत्यंत सुंदर सामाजिक विश्वासों, रीति-रिवाजों, विचारों और संस्थाओं का निर्माण किया है। इन सबका पोषण समाज द्वारा होता है। जो इन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरीत करने के लिए इच्छुक होते हैं। ऐसी संस्थाओं में सबसे पुरानी संस्था 'परिवार' है। परिवार समाज की प्राथमिक संस्थाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण और प्राचीन संस्था है। परिवार एक ऐसे समूह के रूप में दिखाई देता है जिसमें बूढ़े-जवान, पति-पत्नी तथा उनके बच्चे रहते हैं। प्रत्येक मानव परिवार में जन्म लेता है, लेकिन परिवार क्या है ? इसे वह प्रथम अनुभव से ही जानता तथा समझता है। परिवार समाज की एक आधारभूत एवं सार्वभौमिक संस्था है। हम परिवार के अलावा समाज की निरंतरता एवं सातत्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। परिवार का मुख्य उद्देश्य संतानोत्पत्ति ही है। इसे स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "परिवार मानव जाति में आत्मरक्षण, वंशवर्धन और जातीय जीवन में सातत्य को बनाए रखने का प्रधान साधन है। मनुष्य मरण धर्मा है, किंतु मानव जाति अमर है। व्यक्ति उत्पन्न होते हैं, बचपन, यौवन, बुढ़ापें की अवस्था भोगकर समाप्त हो जाते हैं, पर वंशपरंपरा द्वारा उनका संतानक्रम अविच्छिन्न क्रम से चलता रहता है। मृत्यु और अमरत्व दो विरोधी वस्तुएं हैं, किंतु परिवार इन दोनों का समन्वय करता है। व्यक्ति भले ही मर जाए पर परिवार और विवाह द्वारा मानव जाति अमर है।"[1] इस प्रकार हमारे जीवन की शुरुआत और अंत यह महत्त्वपूर्ण घटनाएं परिवार में ही दिखाई देती हैं।

परिवार को बनाने की प्रवृत्ति मनुष्य में स्वाभाविक रूप से होती है। संसार के हर कोने में स्थित समाज में अपनी-अपनी जाति के अनुसार बना परिवार दिखाई देता है क्योंकि परिवार में ही मानव के

आत्मसंरक्षण, वंशवर्धन और जातीयता का विकास होता है। परिवार के बिना मनुष्य-मनुष्य नहीं है। मानव के शरीर एवं मन का परिवार अविभाज्य अंग है। सभी मानवों में पारिवारिक वृत्ति जन्मजात होती है। भारतीय संस्कृति में तो परिवार का अनन्य साधारण महत्त्व स्वीकार किया गया है। भारतीय संस्कृति में परिवार के इसी विशद दृष्टिकोन को चरितार्थ करते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को महत्त्व दिया गया है। विश्व की परंपरागत, सार्वकालीक, आधारभूत, बहु उद्देश्यपूर्ण सामाजिक संस्था का मूल आधार परिवार ही है। परिवार में ही व्यक्ति के सामाजिक संबंधों का विकास होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि परिवार व्यक्ति को सामाजिक जीवन के लिए तैयार करता है।

3.1 परिवार : अर्थ

'परिवार' शब्द संस्कृत के 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'वृ' धातु में 'धत्र' प्रत्येय के योग से बना है। 'मानक हिंदी कोश' के अनुसार ''परिवार (सं.) परि + वृ (ढकना) + धत्र अर्थात (अ) एक ही पूर्व पुरुष के वंशज (ब) एक घर में और विशेषतः एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहनेवाले लोग।''[2]

विभिन्न कोशकारों ने दिया हुआ परिवार का अर्थ इस प्रकार है -

3.1.1 मानक हिंदी कोश - (सं. रामचंद्र वर्मा)

(परि (ढकना) + धत्र)

1. एक ही पूर्व पुरुष के वंशज।
2. एक घर में और विशेषतः एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहने वाले लोग।
3. किसी विशिष्ट गुण संबंध आदि के विचार से चीजों का बनने वाला वर्ग।
4. किसी राजा रईस के आगे-पीछे चलने या साथ रहने वाले लोग।

3.1.2 हिंदी शब्द सागर (सं. श्यामसुंदर दास)

1. कोई ढकनेवाली चीज। परिच्छेद। आवरण।
2. म्यान। नियाम। कोश। तलवार की खोली।
3. वे लोग जो किसी राजा या रईस की सवारी में उसके पीछे उसे घेरे हुए चलते हैं।
4. वे लोग जो अपने भरन पोषण के लिए किसी विशेष व्यक्ति के आश्रित हो। आश्रित वर्ग। पोष्यजन।
5. एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ठ संबंध रखनेवाले मनुष्यों का समुदाय। भाई बेटे आदि और सगे संबंधियों का परिजन समूह। कुटुंब। कुनबा। खानदान।

6. एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह। कुल।

3.1.3 प्रामाणिक हिंदी कोश (सं. रामचंद्र वर्मा)

1. अवरण
2. म्यान। कोश।
3. किसी राजा या रईस के साथ उसे घेरे चलनेवाले लोग परिषद।
4. घर के लोग कुटुंब।
5. वंश। खानदान।
6. बालबच्चे
7. एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग। कुल। जाति।

3.1.4 संक्षिप्त शब्द सागर

1. एक ही कुल में उत्पन्न मनुष्यों का समुदाय। कुटुंब। कुनबा। खानदान। कुल।
2. किसी व्यक्ति को घेरे हुए चलने वाले लोग। अनुगामियों का वर्ग।
3. स्वजनों या आत्मीयों का समुदाय। परिजन वर्ग।
4. किसी पर आश्रित व्यक्तियों का समूह।
5. एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह।
6. तलवार की खोली म्यान।
7. ढकनेवाली चीज। अवरन। ढकना।

3.2 ***परिवार : परिभाषा***

परिवार का विभिन्न कोशकारों के द्‌वारा अर्थ स्पष्ट करने के बाद परिवार की विभिन्न विद्‌वानों द्‌वारा दी हुई परिभाषाएं हम देखेंगे -

1. डॉ. डी. एम. मजुमदार -

"परिवार व्यक्तियों का एक समूह है जो एक छत के नीचे निवास करते हैं और जो मूल और रक्त संबंधी सूत्रों से संबद्‌ध होते हैं तथा स्थान, रुचि एवं कृतज्ञता की अन्योंन्याश्रितता के आधार पर जाति की जागरुकता रखतें हैं।"[3]

2. ऑगबर्न तथा निमकॉफ -

"बच्चों या बिना बच्चों वाले एक पति-पत्नी के या किसी एक पुरुष या एक स्त्री के अकेले ही अपने बच्चे सहित एक थोड़े बहुत स्थायी संघ को परिवार कहते हैं।"[4]

3. मैकआइवर -

"परिवार वह समूह है जिसका आधार समिति और संयमित यौन संबंध है एवं जिसके द्वारा बालकों का जन्म एवं लालन-पालन होना संभव होता है परंतु परिवार का मुख्य आधार पुरुष और स्त्री का साथ रहना और संतान उत्पन्न करना ही है।"[5]

4. निमकाफ -

"इसे संतान सहित अथवा संतान रहित पति-पत्नी की स्थायी समिति मानते हैं।"[6]

5. बरजस और लाक -

"परिवार वह समूह है जो कि विवाह, रक्त संबंध अथवा गोद लेने आदि से बंधा हुआ है। इसमें एक घर बनाकर पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन अपनी-अपनी सामाजिक पृष्ठभूमियों में रहते हुए एक-दूसरे को अंतः प्रभावित करते हैं तथा स्वयं भी इसी प्रकार प्रभावित होते हैं तथा संगठित होकर एक सांझे की संस्कृति का निर्माण करते हैं।"[7]

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर परिवार की परिभाषा स्पष्ट होती है।

3.3 ***परिवार : प्रयोजन***

मुख्य रूप से देखा जाए तो परिवार का उद्देश्य मानव की अवश्यकताओं की पूर्ति करना और मानव जाति को कायम रखना ही है। समस्त मानव जाति में परिवार मुख्य रूप से कामेच्छा पूर्ति या भौतिक अवश्यकताओं की पूर्ति न होकर धर्म, अर्थ, काम और पुत्र प्राप्ति ही है। सभी स्मृतिकारों ने गृहस्थाश्रम को अन्य सभी आश्रमों से श्रेष्ठ माना है। महाभारत में भी गृहस्थाश्रम का बड़ा गुणगान किया गया है। मुख्य रूप से परिवार के चार प्रयोजन इस प्रकार हैं -

3.3.1 धर्म

धर्म भारतीय जीवन का मूलाधार है। विभिन्न धार्मिक कार्य संपन्न करते समय परिवार अर्थात पत्नी का होना अत्यंत आवश्यक माना गया है। हिंदू धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि बिना पत्नी के पुरुष धर्म का अधिकारी नहीं हो सकता इसलिए पत्नी को धर्मपत्नी कहा जाता है। वैदिक युग में प्रत्येक मनुष्य ब्रह्म, देव,

ऋषि, समाज, तथा प्राणीमात्रों के ऋण में होता है ऐसी धारणा प्रचलित थी। इन ऋणों से मुक्ति पाने के लिए हिंदू व्यक्ति को ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ यह पांच महायज्ञ करने पड़ते थे और इसमें से कोई यज्ञ बिना पत्नी के पूरा नहीं होता था। इसलिए श्री 'रामचंद्र' को 'सीता' के अभाव में सीता की प्रतिमा स्थापित करके 'अश्वमेध यज्ञ' संपन्न करना पड़ा। यज्ञ में स्त्रियों को इतना महत्त्व देने से स्पष्ट होता है कि पुरुष स्त्री के अभाव में अपूर्ण है। इसी दृष्टि से भगवान शिव को अर्धनारीश्वर कहा गया है। पत्नी को अर्धांगिणी कहा गया है। इस प्रकार भारतीय परिवार का प्रथम प्रयोजन पत्नी द्वारा धार्मिक कार्यों को संपन्न करना है।

3.3.2 अर्थ

धर्म के बाद 'अर्थ' परिवार का दूसरा प्रयोजन है। डॉ. शंभूरत्न त्रिपाठी और डॉ. कैलाशनाथ शर्मा के मतानुसार ''धन उपार्जित करके स्त्री, बच्चों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के पालन-पोषण की व्यवस्था करना। ध्यान रहे धनोपार्जन केवल अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं बल्कि इसका उद्देश्य संपूर्ण समाज का हित करना है। मनु ने कहा है जैसे सब नद और नदियां सागर में जाकर मिलती हैं उसी तरह सब आश्रम गृहस्थाश्रम में आश्रय पाते हैं। यदि गृहस्थ के पास पर्याप्त धन, अन्न, वस्त्र आदि न होगा तो साधु संन्यासी, ब्रह्मचारी तथा निर्धन लोगों को आश्रय कहां प्राप्त होगा ? अतः परिवार का दूसरा उद्देश्य लोककल्याण तथा अपने कल्याण के लिए धन पैदा करना है।''[8]

3.3.3 काम

विवाह और परिवार का तीसरा प्रयोजन काम बतलाया गया है। हिंदू धर्म शास्त्र के अनुसार रति केवल वासना पूर्ति न होकर 'कामतृप्ति' है और यह कामतृप्ति समाज की मान्यताओं से करने के लिए विवाह आवश्यक माना गया है। प्राचीन शास्त्रों में रति सुख की तुलना 'ब्रह्मानंद सहोदर' से करते हुए भोग को धार्मिक कर्तव्य बतलाया है। इसलिए परस्त्री को माता के समान मानते हुए केवल अपनी पत्नी के साथ ही कामेच्छा की पूर्ति करें जिससे उत्तम संतान प्राप्ति का हेतु सफल हो। उपनिषदों में भी चरम सुख की उपमा यौन सुख को देकर उसके महत्त्व को बढ़ाया है। ''जैसे कोई अपनी प्रिय पत्नी से मिलता हुआ न बाहर के जगत को कुछ भी जानता है और न अंतरिक जगत को जानता है ऐसे ही यह पुरुष प्राज्ञ आत्मा से जुड़ा हुआ न बाहर की किसी वस्तु को जानता है और न अंदर की वस्तु को जानता है।''[9] इस प्रकार भारतीय परिवार का उद्देश्य केवल काम की पूर्ति न होकर पुत्र-प्राप्ति कर सृष्टिक्रम को बनाए रखना भी है।

3.3.4 पुत्र-प्राप्ति

हिंदू परिवार के महत्त्वपूर्ण प्रयोजनों में पुत्र-प्राप्ति भी एक प्रयोजन है। पितृ ऋण से मुक्ति पाने के लिए पुत्र-प्राप्ति आवश्यक मानी गई है। मनुष्य संतान द्वारा अमरत्व प्राप्त करता है। श्राद्धादि विधि करने का अधिकार पुत्र को ही है, जिससे पितरों को सद्गति प्राप्त होती है। अतः इस तरह की श्रद्धा हिंदूओं में प्रचलित है। ऐसा माना जाता है कि जब तक पितरों का पिंडदान पुत्र नहीं करता तब तक उनको मोक्ष प्राप्ति नहीं होती। मनु स्मृति में अपने पिता को नरक में जाने से जो बचाता है वही पुत्र कहा गया है। जो पुरुष पुत्र को जन्म नहीं देता उसे महाभारत में अधर्मिक माना गया है। ऋग्वेद में पुत्र प्राप्ति को महत्त्वपूर्ण माना गया है। विवाह में पानि-ग्रहण के वक्त वर-वधू से कहता है, 'मैं उत्तम संतान के लिए तेरा पानि ग्रहण करता हूं।' पुरोहित भी वधू को दस पुत्र उत्पन्न करने का आदेश दिया करता था। इस प्रकार पुत्र प्राप्ति से ही परिवार का वंश आगे चलता रहता है, इससे ही परिवार एवं समाज का सातत्य बनाए रहता है।

3.4 ***परिवार : स्वरूप***

प्राचीन काल से लेकर आज तक परिवार को अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त हो चुका है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ आज तक की पारिवारिक संस्था के विकासात्मक स्वरूप पर प्रकाश डालना आवश्यक होगा। अधोलिखित पंक्तियों में हम परिवार के प्रकारों एवं स्वरूपों का संक्षेप में अध्ययन करेंगे -

परिवार : प्रकार

3.4.1 सदस्यों की संख्या

3.4.1.1 एकाकी परिवार

एकाकी परिवार यह परिवार का सबसे छोट रूप है इसमें पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चें रहते हैं। यह परिवार बाहरी संबंधियों से मुक्त होता है। पति-पत्नी के निसंतान होने पर गोद लिया हुआ पुत्र उस परिवार का सदस्य हो सकता है। आधुनिक युग में ऐसे परिवारों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती है। आजकल संयुक्त परिवार के विघटन के फलस्वरूप एकाकी परिवारों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

3.4.1.2 विवाह संबंधी परिवार

विवाह संबंधी परिवार में पति-पत्नी और बच्चों के अतिरिक्त विवाह द्वारा बने हुए कुछ संबंधी भी आ जाते हैं।

3.4.1.3 संयुक्त परिवार

संयुक्त परिवार के अंतर्गत अनेक घनिष्ट संबंध आते हैं। 'हरिदत्त वेदालंकार' के अनुसार ''संयुक्त परिवार वह है जो निवास, भोजन, धर्म, कर्म एक साथ किए जाते हैं, संपत्ति का स्वामित्व, उत्पादन और उपभोग सम्मलित रूप से होता है।''[10]

संयुक्त परिवार में संचालन का काम परिवार का मुखिया करता है। परिवार का मुखिया पारिवारिक सदस्यों में स्नेह-भाव बनाए रखता है। आर्थिक व्यवस्था करता है, तथा पारिवारिक झगड़ों को भी निपटाता है। परिवार के साथ परिवार के बाहर के कार्यों में भी वही प्रतिनिधित्व करता है। परिवार के मुखिया की पत्नी परिवार की अन्य स्त्रियों में प्रमुख मानी जाती है। वह परिवार के अंतरिक कार्यों की देखभाल करती है। संयुक्त परिवार में परिवार के नियमों एवं आचार-विचार के अनुकूल चलने का अभ्यास करना पड़ता है। जादा तर गांवों में संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक है परंतु आजकल औद्योगीकरण और नगरी करण के प्रभाव से संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं। और एकाकी परिवार की ओर झुकाव बढ़ने लगा है।

3.4.1.4 सम्मिलित परिवार

सम्मिलित परिवार में ऐसे परिवार आ जाते हैं जिनमें एक व्यक्ति अपनी अनेक पत्नियों और उन पत्नियों से उत्पन्न बच्चों के साथ सामूहिक रूप से रहते हैं। इस परिवार में ऐसे भी सदस्य रहते हैं जो रक्त संबंधी न होते हुए भी पारिवारिक भावना से युक्त होने के कारण साथ-साथ रहते हैं और पारिवारिक वातावरण का उपभोग लेते हैं।

3.4.2 विवाह का स्वरूप

विवाह के स्वरूप के आधार पर भी परिवार के विभिन्न प्रकार पाए जाते हैं वे इस प्रकार हैं -

3.4.2.1 एक विवाह परिवार

इस प्रकार के परिवार के अंतर्गत पति-पत्नी तथा उनकी संतान ही होती है। यह परिवार एक विवाह के आधार पर स्थित होता है। आधुनिक समाज में इस प्रकार का परिवार सर्वस्वीकृत माना जाता है।

3.4.2.2 बहुविवाही परिवार

इस प्रकार के परिवार के अंतर्गत एक स्त्री अथवा पुरुष एक से अधिक पुरुष या स्त्री से विवाह करते हैं तब बहुविवाह परिवार का निर्माण होता है। बहुविवाह परिवार के दो प्रकार दिखाई देते हैं -

I] बहुपति -

इस के अंतर्गत एक स्त्री जब अनेक पुरषों से विवाह करके घर बसाती है तो उसे बहुपति विवाह कहते है।

II] बहुपत्नी -

इस के अंतर्गत जब एक पुरुष अनेक स्त्रियों से विवाह करता है तो उसे बहुपत्नी विवाह कहते हैं। भारत की अनेक जातियों में बहुपत्नी विवाह प्रथा पाई जाती हैं।

3.4.3 पारिवारिक सत्ता

3.4.3.1 मातृवंशी परिवार

मातृवंशी परिवार ऐसे परिवार को कहा जाता है जिसमें अधिकार पत्नी अथवा माता का होता है। वंश की गणना पिता से नहीं बल्कि माता से की जाती है। पत्नी के संबंधियों के घर में बच्चों का लालन-पालन होता है। इस प्रकार के परिवार में पति का अधिकार नहीं होता बल्कि पति पत्नी के परिवार का एक सदस्य होता है और वहीं रहने लगता है। मातृवंशी परिवार में बच्चें मां के नाम से जाने जाते हैं।

3.4.3.2 पितृवंशी परिवार

पितृवंशी परिवार उसे कहते हैं जहां सत्ता का अधिकार पति या पिता के हाथ में होता है। विवाह के पश्चात् पत्नी पति के घर आकर रहती है। वंशनाम पिता के आधार पर होता है। अतः इस प्रकार के परिवार को पितृवंशी परिवार कहते हैं। पितृवंशी परिवार में बच्चों का अपने पिता की संपत्ति पर अधिकार होता है। माता का परिवार की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता। ऐसे परिवार में बड़े पुत्र का महत्त्व अधिक होता है। पिता की मृत्यु के बाद बड़ा बेटा ही परिवार के कर्ता का पद ग्रहण करता है। पिता की संपत्ति पर भी उसका अधिकार होता है एवं परिवार का संचालन कर्ता भी वहीं होता है। भारत की अधिकांश जातियों में पितृवंशी परिवार पाए जाते हैं।

3.4.4 भौगोलिक स्थिति

जिस प्रकार भौगोलिक स्थिति हो उसके आधार पर भी परिवार के विभिन्न प्रकार होते हैं जो इस प्रकार है -

3.4.4.1 ग्रामीण परिवार

स्थान के आधार पर भी परिवार का स्वरूप परिवर्तित होता है। अगर मूल रूप से देखा जाए तो परिवार का जन्म ग्रामीण क्षेत्र में ही हुआ है। इसका स्वरूप जादा तर संयुक्त परिवार जैसा होता है। इन परिवारों में अतिथ्य सत्कार धार्मिक व्रत, त्यौहार आदि विशेष रूप से दिखाई देते हैं। ग्रामीण परिवारों में जातीय भिन्नता नहीं होती बल्कि वे हमेशा एक-दूसरे की सहायता करने के लिए कटिबद्ध रहते हैं। ग्रामीण परिवारों में गृहस्थी का भार पुरुषों के साथ-साथ प्रायः स्त्रियों पर भी रहता है।

3.4.4.2 शहरी परिवार

खास तौर पर देखा जाए तो औद्योगीकरण और नागरीकरण के कारण ग्रामीण परिवारों का विस्तार हुआ है। और उनकी अनेक शाखाएं नगरों की ओर स्थानांतरित हो गई हैं। इन परिवारों पर आधुनिक सभ्यता का अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव होता है। इनकी संख्या काफी पैमानेपर बढ़ने लगी है।

3.4.4.3 आदिम परिवार

आदिम परिवार सृष्टि के आदिकाल से लेकर सभ्यता के विकास के साथ-साथ विकसित होते जा रहे हैं। भारत की अनेक जातियों की पारिवारिक व्यवस्था सभ्य जातियों की अपेक्षा नितांत भिन्न है। इनमें खासकर थारु, खस, गोंड, बावर, संथाल, नागा, भील, खासी, कटनर, कंजर, बनजारे आदि प्रमुख भारतीय जातियां हैं। इन जातियों में परिवारों का स्वरूप अलग-अलग होता है एवं विवाह की प्रथाएं भी अलग-अलग होती हैं। इन जातियों में सामाजिक बंधन अधिक सदृढ़ दिखाई देते हैं। ये परिवार अपनी परंपराओं से आबद्ध होने के कारण सामान्य परिवारों से अलग, भिन्न दिखाई देते हैं।

3.4.5 धार्मिक आधार

धार्मिकता के आधार पर निर्मित परिवार को स्पष्ट करने के लिए भारत की मुख्य तीन जातियों के आधार पर निर्मित परिवार इस प्रकार है -

3.4.5.1 हिंदू परिवार

हिंदुओं की पारिवारिक व्यवस्था में विवाह को एक प्रमुख धार्मिक संस्कार माना गया है। हिंदू परिवारों में मुख्य रूप से षोड़श संस्कारों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पति-पत्नी तथा पुत्र-पुत्री इनके संबंध एवं कार्य निश्चित होते हैं। पत्नी साध्वी, पतिव्रता होती है। पत्नी के लिए पति परमेश्वर होता है। आदर्श पुत्र आजीवन मातृ-पितृ का ऋण चुकाने के लिए कृतसंकल्प होता है। परिवार में कन्या को पूज्य भाव से देखा जाता है। हिंदू परिवार में विधवाओं का जीवन त्यागमय होता है। अतिथ्य इनका विशेष धर्म होता है। परिवार का मुखिया जेष्ठ पुरुष होता है।

3.4.5.2 मुस्लिम परिवार

यह इस्लाम के अनुकूल देशकाल तथा परस्थितियों के अनुकूल बदलती हुई जीवन प्रणाली के समर्थक है। मुस्लिम परिवारों में मातृसत्ता प्रचलित परिवार भी पाए जाते हैं। मुसलमानों में समगोत्रियों तथा निकटतम रक्त संबंधियों से विवाह संबंध करने की व्यवस्था प्रचलित है। इन परिवारों में पैतृक दायित्व को अधिक प्रधानता नहीं दी गई है। इनमें पुनर्विवाह, विधवा विवाह, तलाक आदि न्याय संगत माने जातें हैं। मुस्लिम परिवार पारलौकिक चेतना से अधिक प्रभावित नहीं रहतें। इनका परमप्राप्य भौतिक सुखसमृद्धि ही है।

3.4.5.3 ईसाई परिवार

ईसाई परिवार पश्चिमी सभ्यता से विशेष प्रभावित दिखाई देते हैं। इस में संयुक्त परिवार का प्रचलन नहीं के बराबर है। इनका मूल उद्देश्य जीवन की भौतिक उपलब्धि है। इन परिवारों में एक पत्नीव्रत या एक पतिव्रत आवश्यक नहीं है। ईसाई परिवारों में कौमार्यवस्था की उत्पन्न संतानें भी वैध मानी जाती हैं। इनके सामाजिक प्रचलन के अनुसार विवाह धर्म बंधन न होकर वैयक्तिक प्रेम बंधन है।

3.4.6 आर्थिक आधार

आर्थिक व्यवस्था का पारिवारिक स्वरूप के संगठन पर गंभीर प्रभाव डाला है। इसके अनुसार परिवार के प्रकार इस प्रकार है -

3.4.6.1 धनिक परिवार

धनिक परिवार में राजन्य परिवार, सामंती परिवार, जमींदारी, जागीदारों और पूंजीपतियों के परिवार आते हैं। यह परिवार अपनी राजकीय मर्यादा और कुल प्रतिष्ठा की ओर विशेष दायित्व रखते हैं। इसमें

परिवार के प्रत्येक सदस्य जैसे राजमाता, युवराज, युवराज्ञियां और अन्य स्वजनों को सम्यक जीवन निर्वाह के लिए एक निश्चित निधि-नियम कर दी जाती है।

3.4.6.2 मध्यमवर्गीय परिवार

यह परिवार अपर्याप्त आर्थिक साधनों और अनियंत्रित धनव्य से ग्रस्त रहते हैं। सभ्यता के प्रसार, शैक्षिक जागृति और औद्योगीकरण के फलस्वरूप पूंजी के असंतुलित वितरण के कारण ऐसे परिवारों की संख्या बढ़ती चली जा रही हैं। ये परिवार प्रायः बुद्धिजीवी होते हैं। इसलिए इनमें कृत्रिम जीवन तथा अन्य आड़ंबर अधिक दिखाई देते हैं। ये परिवार अपनी परंपरा के प्रति अधिक आसक्त होते हैं।

3.4.6.3 निम्नवर्गीय परिवार

आधुनिक आर्थिक विषमताने और मशीनीकरण के कुपरिणाम स्वरूप श्रम की प्रतिष्ठा घट गई है। इसके परिणामस्वरूप श्रमजीवी वर्ग का भी पराभव हुआ है। भारत के श्रमिक, कृषक और भिक्षाजीवी वर्ग इसी श्रेणी में आते हैं। इन परिवारों में दैनिक अवश्यकताओं की वस्तुओं का नितांत अभाव रहता है और आर्थिक विफलता के कारण उनका जीवन नरकीय बन चुका है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाश्चात्य राष्ट्रों की अपेक्षा भारत में परिवार एवं पारिवारिक आत्मीय संबंध को जादा महत्त्व दिया जाता है। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना ने परिवार एवं समाज का अटूट संबंध स्थापित किया है। विविध जाति-धर्मों में, देश, काल एवं स्थान के अनुरूप परिवार के रूपों में विभिन्नता जरूर दिखाई देती है फिर भी परिवार बनाने की कामना हर व्यक्ति में निहित होती है। इसलिए हमारे राष्ट्र में परिवार का महत्त्व पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से अक्षुण्ण है।

3.5 परिवार : विशेषताएं

परिवार के स्वरूप को स्पष्ट करने के बाद परिवार की विशेषताएं इस प्रकार उपलब्ध हैं। परिवार एक सार्वभौमिक संस्था के रूप में दिखाई देता है। सामाजिक विकास की सभी अवस्थाओं तथा प्रत्येक काल में किसी-न-किसी रूप में इसका अस्तित्व पाया जाता है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण यह कहा जा सकता है कि हम परिवार के अलावा मानव एवं मानव समाज की कल्पना भी नहीं कर सकतें। डॉ. आशा बागड़ी के मतानुसार "सभी तीव्रग्रहण शक्ति प्राप्त बुद्धिजीवी स्त्री-पुरुषों ने स्वीकार किया है कि परिवार आधारभूत सामाजिक इकाई के रूप में तथा समाज के ढांचे और चरित्र को बनाने में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।"[11] मनुष्य जहां कहीं भी निवास करता है वहां परिवार का अस्तित्व पाया जाता है। इसलिए परिवार की सर्वप्रथम अवस्था के रूप में सार्वभौमिकता महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

मनुष्य की अनेक स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियों पर परिवार आधारित होता है। मनुष्य का भावजगत ही परिवार का मुख्य आधार है। पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति अथाह प्रेम तथा दोनों का बच्चों के प्रति प्रेम, एक-दूसरे को त्याग एवं बलिदान के लिए बाध्य करता है। विवाह के पश्चात् माता और पिता में संतान प्राप्ति की इच्छा दिखाई देती है। इसी मूल प्रवृत्ति के साथ-साथ वात्सल्य ये घटक महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। अतः परिवार पूर्ण रूप से मनुष्य की भावना पर अश्रित दिखाई देता है। इसलिए परिवार के सदस्यों में एक-दूसरे के प्रति आत्मत्याग एवं वात्सल्य की भावना से प्रेरित रहते हैं।

परिवार में रचनात्मकता का प्रभाव दिखाई देता है। अगर चरित्र निर्माण की दृष्टि से देखा जाए तो व्यक्ति पर सबसे पहले प्रभाव परिवार का ही पड़ता है। परिवार के बारे में उसे बताने की अवश्यकता नहीं होती तो वह उसे स्वयं अनुभव करता है। परिवार में ही मनुष्य का मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है। बचपन से हुए संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। "परिवार का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक रूप से बच्चों पर इतना शीघ्र प्रभाव पड़ता है कि मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार मनुष्य अपने चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण पांच वर्ष की आयु तक या उससे भी पूर्व कर लेता है।"[12]

आकार की दृष्टि से देखा जाए तो सामाजिक संगठनों के रूप में सबसे छोटा रूप परिवार कहा जा सकता है। जो परिवार में जन्म लेता है वहीं उसका सदस्य कहा जा सकता है। आजकल आधुनिकता के कारण इसका आकार सीमित दिखाई देता है। क्योंकि परिवार रक्त समूह से बिल्कुल पृथक दिखाई देता है। संयुक्त परिवार के विघटन से इसका स्वरूप संक्षिप्त होता जा रहा है। आजकल के परिवार तो पति-पत्नी और उनके बच्चों का ही होता है।

पारिवारिक, सामाजिक ढांचे में परिवार केंद्रीय स्थिति के रूप में दिखाई देता है। परिवार सामाजिक संगठन की प्रमुख इकाई है। इसलिए समाज का संपूर्ण ढांचा इस पर निर्भर दिखाई देता है। अतः परिवार का विकसीत रूप ही समाज है इसलिए अरस्तु समाज को अनेक संगठनों का स्वरूप मानते हैं। बड़े पैमाने पर समाज जिन कार्यों को संपन्न करता है। उन्हें परिवार छोटे पैमाने पर संपन्न करता है। इस प्रकार परिवार सामाजिक ढांचे में केंद्र की स्थिति पर है।

परिवार में सदस्यों का उत्तरदायित्व असीमित होता है। आपत्तिकाल में समाज एवं देश के लिए कुछ लोग कार्य करते हैं और सर्वस्व त्याग देते हैं। परंतु परिवार के लिए मनुष्य सदैव कार्यरत रहता है और इतना व्यस्त हो जाता है कि परिवार ही उसके लिए सबकुछ होता है। परिवार के सभी सदस्य कठिन परिश्रम करके परिवार को समृद्ध बनाते हैं। उत्तदायित्व की भावना मनुष्य स्वभाव में जन्म से ही पाई जाती है, जो परिवार को स्थायित्व प्रदान करती है।

सामाजिक नियंत्रण मनुष्य को मुख्य रूप से नियंत्रित करनेवाली संस्थाओं में परिवार का स्थान सर्वोपरि है। बच्चों को नियंत्रण की शिक्षा परिवार में दी जाती है। सामाजिकरण की प्रक्रिया में बालक समाजिक नियंत्रण को स्वीकारता हुआ नियंत्रण व्यवस्था को भी स्वीकारता है। परिवार का नियंत्रण मुख्यतः प्रेम एवं भावना पर आधारित होता है।

स्थायी एवं अस्थायी यह परस्पर विरोधी विशेषताएं परिवार में पाई जाती हैं। परिवार समिति के रूप में अस्थायी है। पति-पत्नी के विवाह से परिवार का निर्माण होता है। इसमें किसी की मृत्यु या तलाक के द्वारा यह समिति समाप्त हो जाती है। इस दृष्टिकोन से परिवार की प्रकृति अस्थायी है। लेकिन परिवार को संगठन के रूप में देखा जाए तो वह स्थायी है। इस प्रकार परिवार संस्था के रूप में सदैव जीवित रहता है।

परिवार प्रक्रिया के रूप में महत्त्वपूर्ण संस्था है। परिवार को चार स्तरों में विभाजित किया जाता है। जिन में से गुजर कर बालक अपने व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास करता है। ये चार स्तर इस प्रकार है - 1] निर्माणावस्था 2] विवाहावस्था 3] पूर्व विवाहावस्था 4] विवाहोपरांत अवस्था

भारतीय परिवारों में ये चार प्रकार की अवस्थाएं होती हैं। प्रत्येक भारतीय मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक इन प्रक्रिया के बीच से गुजरता है।

उपर्युक्त विवेचन के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि अन्य सामाजिक संस्थाओं या समितियों से परिवार सर्वथा वैशिष्ट्य पूर्ण संगठन है। अन्य किसी भी संस्था में परिवार संस्था का यह महत्त्वपूर्ण स्थान पूर्ण रूप से नहीं लिया हैं।

3.6 परिवार : महत्त्व

अगर देखा जाए तो मानव विकास के संपूर्ण इतिहास में परिवार का विशेष महत्त्व रहा है। मनुष्य जीवन को सुनियोजित एवं संगठित बनाने के लिए परिवार अनेक मौलिक एवं परंपरागत कार्य संपादित करता है। जिसने मनुष्य के असभ्य युग से सभ्यता के युग में प्रवेश किया है। इसी कारण सामाजिक प्रक्रिया में परिवार को अत्यधिक महत्त्व प्राप्त हुआ है। अतः परिवार के महत्त्व को समझने के लिए उसके प्रमुख कार्यों को समझना अत्यंत आवश्यक है।

परिवार के कार्य

3.6.1 कामवासना की पूर्ति

कामवासना की पूर्ति करना परिवार का महत्त्वपूर्ण कार्य है। सृष्टि के प्रारंभ से समाज ने इस कार्य को

परिवार संस्था को सौंप रखा है। इससे परिवार में व्यक्ति के यौन संबंधों पर नियंत्रण एवं नियमन रहता है। 'महेंद्र कुमार जैन' के अनुसार - ''आदिम समाजों में यौन-संबंधों की कुछ छुट आवश्य थी पर वह भी एक निश्चित सीमा तक सभ्य समाजों में विवाह संबंधों के अतिरिक्त पुरुष या स्त्री की यौन स्वतंत्रता या मर्यादा को भंग करने की स्थिति को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। परिवार ही एक ऐसा साधन है जिसके अंतर्गत काम के धर्मसम्मत रूप की प्रतिष्ठा करके एकाकी जीवन की निरसता को सरसता में बदला जा सकता है।''[13] इस प्रकार समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त होने पर स्त्री-पुरुष सुयोग पारिवारिक पृष्ठभूमि को निर्माण करता है।

3.6.2 संतानोत्पत्ति

कामवासना की पूर्ति का परिणाम संतानोत्पत्ति में होता है। सृष्टि के प्रारंभ से प्रत्येक समाज एवं संस्कृति में यह प्राणी शास्त्रीय कार्य पाया जाता है। परिवार में निर्मित यह कार्य मानव समाज के अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण है। सिर्फ परिवार में ही पुरुष तथा स्त्रियों को यौन संबंध प्रस्थापित करके संतान पैदा करने की स्वीकृति समाज द्वारा प्राप्त है। परिवार या विवाह के अलावा भी संतानोत्पत्ति हो सकती है। लेकिन उसे समाज की स्वीकृति नहीं मिलती मानव प्रवृत्ति एवं सृष्टि के नियमों पर आधारित इस कार्य को परिवार सदैव संपन्न करता आया है।

3.6.3 बच्चों का पालन-पोषण

कामपूर्ति एवं संतानोत्पत्ति के बाद परिवार का यह तीसरा मौलिक कार्य है। अगर इतर पक्षुओं की तुलना में देखा जाए तो मानव-शिशु लंबी अवधि तक असहाय रहता है जिसके फलस्वरूप उसके माता-पिता पर एक विशेष उत्तरदायित्व रहता है कि वे उसे जीवित रखने के लिए उसका पालन-पोषण करें ! शिशु-पालन के लिए समाज में कई संस्थाएं कार्यरत हैं किंतु परिवार के अलावा कोई भी संस्था यह कार्य सही ढंग से नहीं कर सकती। इस प्रकार परिवार बच्चों का सही ढंग से पालन-पोषण एवं उसके व्यक्तित्व का विकास करके समाज को एक सुयोग्य नागरिक प्रदान करता है।

3.6.4 भोजन, वस्त्र, निवास

मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं में भोजन, वस्त्र और निवास व्यवस्था आती है। प्रत्येक परिवार का मुखिया अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए उपयुक्त निवास स्थान, भोजन एवं वस्त्रों की व्यवस्था करने का कार्य करता है। इसमें निवास स्थान अथवा घर इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बिना घर के परिवार

का अस्तित्व संभव नहीं है। घर और परिवार एक दूसरे से इतने संबंधित हैं कि दोनों शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची समझे जाते हैं।

3.6.5 मनोवैज्ञानिक कार्य

मनुष्य को जिस प्रकार उत्तम आहार और पोषण की अवश्यकता होती है, उसी तरह मानसिक सुरक्षा एवं प्रेम की भी अवश्यकता होती है। परिवार जिस प्रकार वात्सल्य एवं मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की भावना को प्रदान करता है वह दूसरी संस्थाओं तथा समितियों द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती। घर एक ऐसा स्थान है यहां मनुष्य व्यवहारिक जगत के सभी दुःखों को भूलकर आराम पाता है। परिवार में निर्मित पारस्परिक संबंध या प्रेम की भावनाएं व्यक्तित्व के विकास में बड़ी सहायता प्रदान करते हैं। आजकल के आधुनिक तथा समस्यापूर्ण जीवन में तो मानसिक संरक्षण देने की परिवार की जिम्मेदारी अधिक बढ़ गई है।

3.6.6 आर्थिक कार्य

परिवार के पालन-पोषण की चिंता परिवार के मुखिया की होती है, इसलिए वह धनोपार्जन करता है। परिवार का मुखिया जो कुछ धन कमाता है उसका उपभोग परिवार के सदस्य लेते हैं। परिवार के द्वारा ही व्यक्तिगत संपत्ति की व्यवस्था का विकास किया है। संपत्ति के अधिकारी एवं उसके प्रबंध की व्यवस्था परिवार ही निश्चित करता है। इस प्रकार समस्त आर्थिक कार्यों का केंद्र परिवार रहा है।

3.6.7 शिक्षा-कार्य

बालक की प्रथम पाठशाला परिवार है। वह परिवार में जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक बातें परिवार में सीखता है। इसमें भाषा का आदान-प्रदान, संस्कृति का परिचय, व्यवहार कुशलता, सामाजिक रीति रिवाज आदि बातें वह परिवार के सदस्यों से ही सीखता है। बच्चों का भविष्य प्रायः पारिवारिक शिक्षा द्वारा ही निश्चित होता है, परिवार में जिस शिक्षा को बच्चा ग्रहण करता है, उसका प्रभाव उसके चरित्र में आजीवन मौजूद रहता है। इसलिए परिवार को समाज की आद्य पाठशाला कहा गया है जो उचित ही है।

3.6.8 सामाजिक कार्य

सामाजिकरण, सामाजिक नियंत्रण, स्तर निर्धारण आदि सामाजिक कार्य भी परिवार द्वारा संपन्न किए जाते हैं। समाज में परिवार का एक विशिष्ठ स्थान होता है। इसी स्थान के अनुरूप ही परिवार के सदस्यों की समाज में स्थिति होती है। परिवार व्यक्ति का सामाजिकीकरण करता है। बच्चा परिवार में जन्म लेता है

और परिवार उसे समाज के अनुरूप बना देता है, उसे खान-पीने के नियम सीखा देता है। संस्कृति एवं सभ्यता को एक-पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य परिवार करता है। माता-पिता जो कुछ अपने - पूर्वजों से सीखते हैं वह अपने बच्चों को सीखाने का प्रयत्न करते हैं। परिवार सामाजिक नियंत्रण का केंद्र है। वह अपने सदस्यों पर कठोर सामाजिक नियंत्रण रखता है। जो समाज को व्यवस्थित संचालन के लिए आवश्यक है। समाज के अधिकतर लोग बुरे काम केवल इसलिए नहीं करते हैं कि उनका परिवार उससे बदनाम न हो जाए। यही एक प्रकार का डर उसे रोके रहता है।

3.6.9 राजनैतिक कार्य

परिवार में राजनैतिक कार्य भी हो जाते हैं। इसे स्पष्ट करते हुए महेंद्रकुमार जैन लिखतें हैं, ''परिवार में राजनैतिक कार्य भी होते हैं। प्रायः परिवार का मुखिया इसका निर्वाह करता है। भारत में प्रायः संयुक्त परिवारों में परिवार का मुखिया कर्ता होता है और वह पारिवारिक झगड़ों को निपटा देता है और सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक कार्यों में प्रतिनिधित्व करता है।''[14] परिवार का मुखिया शासक होता है, न्यायाधिश के अधिकार में वह पारिवारिक संघर्ष को हल करता है।

3.6.10 रक्षात्मक कार्य

परिवार के सदस्यों की शारीरिक एवं मानसिक सुरक्षा का उत्तर दायित्व परिवार पर होता है। यही सुरक्षा की भावना जीवन को सफल बनाने के लिए आवश्यक है। बाल्यकाल में माता-पिता बच्चों की देखभाल करते हैं। इसके विपरीत वृद्धावस्था में संतान अपने माता-पिता की देखभाल करती है। परिवार बच्चों को इस प्रकार शिक्षित करता है ताकि वह परिवार की प्रतिष्ठा व मर्यादा की रक्षा करे। परिवार के सदस्यों में सहयोग, सद्भावना और प्रेम का संचार होता है। यही कारण है कि व्यक्ति को व्यावहारिक स्पर्धाओं से सुरक्षित आश्रय परिवार में मिलता है।

3.6.11 धार्मिक कार्य

धार्मिक कार्य का प्रमुख केंद्र परिवार है। परिवार के प्रायः सभी सदस्य एक ही धर्म के अनुयायी होते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग लेना, ईश्वर की उपासना, पाप-पुण्य का भेद करने की क्षमता परिवार में विकसित होती है। धर्म के माध्यम से बच्चों पर अच्छें संस्कार किए जाते हैं। साथ ही परिवार धार्मिक उत्सवों को मानता है और अपने सदस्यों के धार्मिक विचारों को निर्धारित करता है।

3.6.12 सांस्कृतिक कार्य

धार्मिक कार्यों के साथ संस्कृति को जीवित रखने में परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। परिवार के माध्यम से मनुष्य संस्कार, रीति-रिवाज, परंपरा, विचार, आदर्श रूढ़ियां तथा पूर्व प्रथाओं को ग्रहण करता है। साथ ही समय-समय पर धार्मिक उत्सव, पर्व त्यौहार आदि संपन्न करके परिवार अपने सदस्यों के मनोरंजन का भी कार्य करता है। "वास्तव में परिवार एक सांस्कृतिक केंद्र है जहां मनुष्य संस्कृति और असभ्यता का ज्ञान धीरे-धीरे प्राप्त करता हैं और सामाजिक प्राणी कहलाने का वास्तविक अधिकारी बनता है।"[15] इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के द्वारा परिवार का महत्त्व स्पष्ट होता है।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर परिवार के सैद्धांतिक अध्ययन को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसके उपरांत 'मालती जोशी' के कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन का अध्ययन करने का प्रयास है -

3.7 संयुक्त परिवार

3.7.1 सफल संयुक्त परिवार

प्राचीन काल से संयुक्त परिवार हिंदू समाज व्यवस्था का आधार स्तंभ रहा है। भारत के ग्रामीण विभागों में आज भी इसका प्रचलन अधिक दिखाई देता है। कुछ पाश्चात्य विद्वान इस प्रणाली को अतिप्राचीन मानते हैं। कुछ वैदक मंत्र भी ऐसे पाए जाते हैं जो इस प्रणाली की प्राचीनता को स्पष्ट करते हैं। संयुक्त परिवार के अंतर्गत अनेक घनिष्ठ संबंध आते हैं। इस प्रकार के परिवार में अनेक संबंधी मिलजुल कर रहते हैं। इसे स्पष्ट करते हुए कहा गया है, "उस परिवार को संयुक्त परिवार कहतें हैं, जिसमें मूल परिवार से अधिक पीढ़ियों के सदस्य सम्मिलित हो तथा उनके सदस्य एक-दूसरे से सम्पत्ति आय तथा पारस्परिक अधिकारों एवं कर्तव्यों के द्वारा संबंधित हो।"[16]

संयुक्त परिवार व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति के लिए नहीं होता। प्रत्युत सबके सामान्य हितों की रक्षा भी करता है। संयुक्त परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोग एक साथ रहते हैं। जिससे पीढ़ी की परंपराएं सामाजिक आधार, प्रथाएं, नियम सभी कुछ दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरीत किए जाते हैं। "संयुक्त परिवार एक ऐसा घर है जिसमे नाभीक परिवारों की अपेक्षा अधिक पीढ़ियों के व्यक्ति रहते हैं। जिसके सदस्य संपत्ति, आय, पारस्परिक अधिकार एवं कर्तव्यों द्वारा एक-दूसरे से अबद्ध होते हैं।"[17] संयुक्त परिवार के कारण बच्चों का समुचित विकास भी होता है। साथ ही बूढ़ों एवं विधवाओं को भी सहारा मिलता है।

आधुनिक युग में संयुक्त परिवार का विघटन होता जा रहा है क्योंकि आज व्यक्ति केवल अपनी और अपने बच्चों के सुख संतोष की बातें ही सोचता है, सभी सदस्य आत्मकेंद्री बन गए हैं, संपूर्ण परिवार के सामूहिक हित की ओर किसी का ध्यान नहीं है अतः इससे संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

'परायी बेटी का दर्द' कहानी में मालती जोशी ने सफल संयुक्त परिवार का चित्रण किया है। इस परिवार में सभी लोग आपस में मिलजुलकर रहते हैं। बेटे के दफ्तर से घर आने के बाद अगर मां दिखाई नहीं देती तो उसका मूड ऑफ हो जाता है। इसके बारे में उसकी पत्नी कहती है, "बिल्कुल बच्चों की सी आदत है इनकी। घर पर लौटकर मां न मिले तो बस मूड ऑफ हो जाता है।"[18] सास अपनी बहू को बेटी से भी जादा सभांलती है बहू को छींक भी आती है तो डॉक्टर के पास दौड़ी चली जाती है। इस घर का बेटा नवीन और उसकी पत्नी नीतू में तो अटूट स्नेह दिखाई देता है। जब इन दोनों की बच्ची सोना पडोसियों के साथ बाहर जाती है। पर जब वह रात को जल्दी घर वापस नहीं आती तो घर में सभी चिंतीत दिखाई देते हैं। नवीन अपनी बच्ची की चिंता में गुस्से से बड़बड़ाने लगता है तो नीतू रोने लगती है। अम्माजी परेशान होकर अपने आपको सभांलने की कोशिश करती है और दोनों को समझाती है। पर सोना के घर आने पर घर का सारा वातावरण पूर्ववत हो जाता है।

इस प्रकार इस परिवार में एक-दूसरे से प्रेम तथा एक-दूसरे की चिंता करनेवालें लोग तथा आपस में मिलजुल कर रहने वाले लोग दिखाई देते हैं। पर 'मालती जोशी' ने अपनी कहानियों में ऐसे सफल संयुक्त परिवार का चित्रण बहुत कम पैमाने पर किया है।

3.7.2 असफल संयुक्त परिवार

सामान्यतः संयुक्त परिवारों में कभी-कभी जीवन इतना जटिल हो जाता है, तो कभी कटुतापूर्ण भी बन जाता है। संयुक्त परिवार अपने आप में एक लघु संसार होता है। इस लघु संसार में सब कुछ घट सकता है उसमें भावनात्मक संबंधों का जुड़ाव भी होता है तो कभी भावनात्मक स्तर पर अलगाव भी दिखाई देता है। तो उसमें सहज स्नेह के अवसरों की भांति पारस्परिक कलह और कटूता, ईर्ष्या और द्वेष के अवसर भी होते हैं। कुछ संयुक्त परिवार तो लोकमर्यादा के कारण ऊपर से एक दिखाई देते हैं लेकिन चार दीवारी के भीतर व्यक्तियों का टकराव एक सामान्य स्थिति होती है।

औद्योगीकरण, नागरीकरण, पाश्चात्य विचारों का प्रभाव और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति आजकल पनप रही है। उद्योग व्यवसाय के कारण परिवार की संतान को पारिवारिक वृक्ष के तन से काफी दूर तक फैलने के अवसर मिलने लगे हैं। पहले जब संयुक्त परिवारों में तिल का एक-एक दाना भी बांटकर खाया

जाता था वहां अब वैमनस्य की चिंगारी ने भाई-भाई को खून का प्यासा बना दिया है।

'मालती जोशी' की कहानियों में चित्रित असफल संयुक्त परिवार और कारण इस प्रकार है -

3.7.2.1 बहन की जिम्मेदारी

'मालती जोशी' के 'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी में एक ऐसे परिवार का चित्रण आया है जिसमें बेटी की शादी जब हो रही है तब अचानक दुल्हा गिरता है; और सब को पता चलता है कि वह निमपागल है और उसे मीरगी के झटके आते हैं। यह बात जानकर पिताजी बेटी को ससुराल भेजनें से इंकार कर देते हैं और वह मायके में ही रहती है। पिताजी की मृत्यु के बाद उसकी जिम्मेदारी भाइयों पर आ जाती है। भाइयों को जब बहन के पति की मृत्यु का पता चलता है तो वे अपनी बहन को पति की जायदाद हासिल करने के लिए कोर्ट में खड़ा करते हैं। भाभियां अपनी अनेक कमियों को उसके सामने रख देती है। इससे परिवार में असंतोष और तनाव दिखाई देता है। आखिर एक दिन बहन तंग आकर अपने भाइयों से कहती है, "अब आप फिर मेरा तमाशा बनाने पर तुले हुए हैं। अब आप सबूत जुटायेंगे और कोर्ट-दर-कोर्ट साबित करते फिरेंगे कि मैं सचमुच मरनेवालें की ब्याहता पत्नी हूं। जिस गति से इस देश में दिवानी मुकदमें चलते हैं, उससे जाहिर है इसमें सालों लग जाएंगे तब तक मेरा वजूद क्या होगा, बताइए तो ? मैं कुंवारी हूं या विवाहिता ? विधवा हूं या परित्यक्ता ?"[19]

इस प्रकार बहन की जिम्मेदारी के कारण संयुक्त परिवार में तनाव दिखाई देता है।

3.7.2.2 परेशान माता-पिता

माता-पिता अपना सारा जीवन बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए खर्च करते हैं। लेकिन जब वे बच्चे बड़े होकर अच्छी जगह नौकरी करने लगते हैं तब उन्हें उनके बूढ़े माता-पिता की कोई चिंता नहीं रहती और अपनी यह हालत देखकर वे परेशान हो जाते हैं। मालती जोशी की 'साथी' कहानी में ऐसे ही मजबूर माता-पिता का चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी के माता-पिता अपने कलेक्टर बेटे के पास रहते हैं। उस घर में मां जी को अपने पति को कुछ बनाकर खिलाने का स्वातंत्र्य भी नहीं है। बाबूजी को बहू और पोतों को तकलिफ न हो इसलिए अकेले कमरे में खाना-खाना पड़ता है। बाबूजी अपनी बेटी को मिलने भी बुला नहीं सकतें। बहन को बुलाने की बात सुनकर बेटा अपनी मां से कहता है, "देखो, एकदम इस तरह से मत बुला लिया करों। अभी राखी पर ही तो नीलिमा यहां से गई है। तुम तो जानती हो लड़कियों को बुलाना सहज नहीं है। फिर बच्चों की परीक्षाओं के दिन है घर में मेहमान हो तो सबकुछ अपसेट हो जाता है।"[20] घर में बेटे के मेहमान आने पर बाबूजी को मेहमानों से दूर रखा जाता है ताकि वह कुछ अनापशनाप न बड़बड़ाने

लगें। अंत में मां जी बेटे के घर में अकेले बाबूजी को छोड़कर खुद इस संसार से छुटकारा भी नहीं पाना चाहती क्योंकि उन्हें पता है उनके बाद बाबूजी की देखभाल करनेवाला इस घर में कोई नहीं है।

'अनिकेत' कहानी में भी 'मालती जोशी' ने ऐसे ही बूढ़े माता-पिता का चित्रण किया है जो अपने बच्चों से परेशान हैं। मां और बाबूजी अपने छोटे बेटे के पास रहते हैं। उस घर में जब मां जी नौकरों की शिकायत बहू से करने जाती है तो अमीर घर की बहू उन्हें नौकर न रखने की हैसियत का ताना देती है। यहां तक की मां का अपने बेटे को छुट्टन बुलाना बहू को अच्छा नहीं लगता। उनका बेटा भी मां को खाना बनाने का जिम्मा नौकरों पर छोड़ने के लिए कहता है, "आप तो इन छोटे लोगों को जानती है कलोनी भर में कहते फिरते हैं कि अम्माजी दिन भर रसोई में लगी रहती है जब की आप तो जानती है, नीलू को यह सब करने की आदत नहीं है और फिर जरुरत भी क्या है ?"[21] मां और बाबूजी का बड़ा बेटा और उसकी बीवी दोनों नौकरी करनेवाले होने के कारण वह लोग वहां भी नहीं रह सकते। जब बाबूजी बेटे को अपनी इकलौती बेटी को मिलने बुलाते हैं तो उनका बेटा अपनी साली घर में होने का बहाना बनाता है इस प्रकार मां और बाबूजी को बेटे का घर अपना नहीं लगता और वे इस घर में सुख से नहीं रह सकते।

3.7.2.3 बहू की बीमारी

कुछ संयुक्त परिवारों में किसी पारिवारिक सदस्य की बीमारी के कारण भी पारिवारिक वातावरण बिगड़ सकता है। इस बीमारी का असर पूरे परिवार पर होता है। अपनी 'अक्षम्य' कहानी में मालती जोशी ने बहू की बीमारी के कारण असफल संयुक्त परिवार का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी में घर की बहू गीता किसी असाधारण सी बीमारी से ग्रस्त है। उसकी बीमारी के कारण उसके चार छोटे बच्चों की जिम्मेदारी उसकी सास पर आती है, इससे परेशान होकर वह दिन भर बड़बड़ाती रहती है। एक दिन गुस्से में आकर वह अपने बेटे से कहती है, "अब दिन में बीस बार पानी कौन गरम करेगा जरा सुनूं तो। बबुआ, अब हम भी साठ के हो चले हैं। भगवान होते तो मचिया पै बैठ के माला जपते होते। पर क्या करें - करमों का फेर हैं जो इस उमर में तुम्हारे यहां नरक उलीच रहे हैं।"[22] गीता का पति शाम एक साधारण से दफ्तर में नौकरी पर होने के कारण उसकी सारी कमाई पत्नी के इलाज में जाती है। इसी कारण घर में अर्थाभाव की समस्या दिखाई देती है। शाम की पत्नी की बीमारी के कारण सारे घर का वातावरण बिगड़ जाता है। जापानी गुडीया-सी लगने वाली उसकी बच्चियां अपने आयु से जादा पुरखिन सी लगने लगी है। इन सब परेशानियों के कारण शाम को अपने घर आने की इच्छा भी नहीं होती।

इस प्रकार परिवार के एक सदस्य की बीमारी के कारण पूरे परिवार का वातावरण बिगड़ जाता है।

3.7.2.4 बहू का हीन बर्ताव

कुछ संयुक्त परिवारों में बेटे के शादी से पहले तो परिवार सुखी होता है पर जैसे बेटे की शादी होती है और नई दुल्हन में समझदारी की कमी के कारण परिवार में तनाव का वातावरण निर्माण होता है। मालती जोशी की 'हमको दियो परदेस' कहानी में बहू के हीन बर्ताव के कारण बिखरता संयुक्त परिवार दिखाई देता है। कुसुम ने दस वर्ष की आयु से अपने छोटे भाई की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी। वह अपनी शादी की कल्पना मन से निकालकर सिर्फ अपने भाई और बीमार पिता की ओर अपना ध्यान केंद्रीत करती है। कुसुम अपने भाई को पढ़ा-लिखाकर नौकरी पर लगाती है और उसकी शादी धूमधाम से करती है। पर जो बहू घर में आती है उसके कारण घर में झगड़े शुरू होते हैं। अपने घर में अविवाहित ननंद उसे फूटी आंख नहीं सुहाती इसी कारण वह दिनभर उसे कोसती रहती है। कुसुम के पिताजी अपनी बहू की बातें सुनकर बीमार पड़ते हैं और उसी में उनकी मौत हो जाती है। कुसुम को भी एक विधुर-दो बच्चों के बाप से शादी करनी पड़ती हैं। इस प्रकार बहू के हीन बर्ताव के कारण सारा परिवार बिखर जाता है। ''किसे मालूम था कि डोली से जो उतरा है, वह चांद का टुकड़ा नहीं एक चिंगारी है। जो सारे मधुर संबंधों में आग लगाकर ही दम लेगी। अपंग ससुर और अनब्याही ननंद के साथ जिंदगी भर निभाव करने की कल्पना मात्र से उसका मन कड़वाहट से भर गया था।''[23]

3.7.2.5 अधिकार का अभाव

जब नौकरी करनेवाली मां सेवानिवृत्ति के बाद अपने बेटे के घर में रहने आती है तो उसे अपने बेटे और बहू के अधिकार में जीना पड़ता है। उसके अधिकार की किसी को पर्वाह नहीं होती। उम्रभर नौकरी करते समय अपने अधिकार को जताने की आदत को उन्हें बेटे के घर में छोड़ना पड़ता है। अपनी 'क्षरण' कहानी में मालती जोशी ने ऐसी ही सास का चित्रण किया है। विमलजी प्रधानाचार्या के पद से सेवानिवृत्त होकर अपने बेटे के पास रहने के लिए आ जाती है। पर बेटे के घर में उन्हें अपनी नौकरानी को कुछ देने का भी अधिकार नहीं है। यहां उन्हें अपने दोपहर की चाय की आदत भी छोड़नी पड़ती है। बहू बाहर चली जाने पर उसके बच्चों को संभालना पड़ता है। वह अपनी मर्जी से कोई काम नहीं कर सकती। उनका पार्टी में सबको मनूहार करके खिलाना भी बहू को अच्छा नहीं लगता। अपनी बेटी ने भेजे हुए संतरों को जब वे अड़ोस-पड़ोस में बांटती है तो बहू फौरन अपनी ननंद को फोन करके अपनी सास की शिकायत करती है।

इस प्रकार विमलजी को अपने बेटे के घर में अपने अधिकारों के अभाव में जीना पड़ता है इसलिए असफल संयुक्त परिवार की समस्या दिखाई देती है।

3.7.2.6 अपमानास्पद जीवन

जब मां-बाप अपने बेटों को लिखा-पढ़ाकर बड़ा करते हैं और बेटे बड़ी जगह पर नौकरी पाने के कारण जब अमीर घर की पढ़ी-लिखी लड़की घर में आती है तो बेटा अपने मां-बाप को भूलकर पत्नी के इशारों पर चलने लगता है इसी कारण संयुक्त परिवार में जादातर मां-बाप दुःखी हो जाते हैं और उन्हें अपने ही बेटों से अपमानास्पद बर्ताव का शिकार होना पड़ता है। मालती जोशी की 'मान-अपमान' कहानी में ऐसी ही मां का चित्रण हुआ है। मां अपने घर में आया का काम करनेवाली सहेली समान अल्लारक्खी को अपने डिप्टी बेटे के घर ले आती है। वह अपनी बहू से अल्लारक्खी की मुलाकात अपनी सहेली के रूप में कराती है। पर बहू अपने पति के आ जाने पर फौरन सारी बाते उसे बताती है। यह बाते जानकर बेटा अपनी मां से अपनी अमीर घर की पढ़ी-लिखी पत्नी को साधारण सी नौकरानी के पांव छुने के लिए कहने का कारण पूछता है। अपने बेटे की यह बात सुनकर मां कहती हैं, "वह औरों के लिए नौकरानी हो सकती है मुन्ना, पर तुम्हारी वह धाया मां थी। पूरे ग्यारह साल तक उसने तुम्हें छाती से लगाकर पाला है तुम्हारी बहू उसके पैर पड़ लेती है तो कोई अनर्थ नहीं हो गया।"[24] इस प्रकार अपनी पत्नी की बाते सुनकर अपने प्रति बेटे का बर्ताव देखकर मां को बहुत बुरा लगता है। इस प्रकार मां को अपने बेटे के घर में अपमानास्पद जीवन जीना पड़ता है।

3.7.2.7 अर्थाभाव

अर्थाभाव के कारण भी पारिवारिक असंतोष दिखाई देता है। मालती जोशी की 'साजिश' कहानी में अर्थाभाव की समस्या दिखाई देती है। यह संयुक्त परिवार पहले ही बेटे की अकेले की तनख्वाह पर चलता है। बाबूजी रिटायर्ड हो गए हैं। सोहन और निम्मी की कॉलेज की पढ़ाई है, घर में मां और दो छोटे बच्चे हैं। घर के इतने सारे लोगों का गुजारा बड़ी मुश्किल से होता है। और उस पर फिर पम्मी इस घर की बड़ी बेटी जिसकी शादी हो गई है; वह ससुरालवालों के दूवारा सताए जाने पर बार-बार मायके में अपनी बच्ची के साथ आ जाती है। इससे परिवार का बजट और गड़बड़ा जाता है और घर में अशांति निर्माण होती है। "बजट के गड़बड़ाते ही सारी व्यवस्था चरमराने लगती है। हर कोई एक-दूसरे पर खीझ उतारने लगता है। आरोपों-प्रत्यारोपों का एक दर्दनाक सिलसिला शुरू हो जाता है। घर जैसे नर्क बन जाता है।"[25] पम्मी को विदा करते समय भी घर की मामूली आय में बड़ा छेद हो जाता है। पहले ही घर की आर्थिक परस्थिति अच्छी नहीं है उस पर पम्मी के आ जाने के कारण घर में संघर्षमय वातावरण दिखाई देता है। पर पम्मी के जाने के बाद खर्च की गहरी खाई ठीक से पट भी नहीं पाती की पम्मी का खत फिर से आ जाता है।

3.7.2.8 ससुरालवालों का आतंक

कुछ संयुक्त परिवारों में ससुरालवालें नई आई बहू को सताते हैं जिसके कारण पारिवारिक जीवन में असंतोष तथा तनाव दिखाई देता है। सास और बहू में पीढ़ियों के अंतराल के कारण भी मत भिन्नता दिखाई देती है। सास अपने सारे अधिकार अपनी बहू को सौंपने के लिए तैयार नहीं होती। ननंद भी अपनी भाभी पर अपना अधिकार जमाना चाहती है। मालती जोशी की 'ऊब' कहानी में इसी समस्या का चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी की सुमन का पति शहर में नौकरी करता है। उस पर अपने छोटे भाई की पढ़ाई और बहन के शादी की जिम्मेदारी है इसलिए वह शहर में नौकरी करता है। उसके शहर में होने के कारण सास और ननंद घर में सुमन को सताती हैं। सारा घर का काम अकेली सुमन को करना पड़ता है, साथ ही उन दोनों के ताने भी सुनने पड़ते हैं। जब सुमन का पति महीने दो महीने के बाद घर आता है तो सास और ननंद सुमन के खिलाफ शिकायतें करने बैठ जाती हैं, "उसे मालूम है कि इस बार नरेश के आने पर उसे यह सारी बातें सुनाई जाएगी यह कोई नई बात नहीं थी। नरेश के आते ही सबकी शिकायतों के बस्ते खुल जाते हैं। मां जी जैसे एक-एक बात नोट करती जाती। रमा भी तो उसे नहीं बख्शती ताने और उलाहनों के बिना एक वाक्य भी उसका पूरा नहीं होता। कई बार तो बेचारा कहता भी है। 'क्या यही सब सुनने के लिए मैं इतनी दूर से दौंड़ा-दौड़ा तुम लोगों के पास आता हूं ?"[26]

3.8 ***दांपत्य जीवन***

मुख्यतः दांपत्य जीवन ही परिवार का मुख्य हेतु है। स्त्री और पुरुष के पारस्परिक आकर्षण ने सहचर्य की भावना को जन्म दिया है। साथ ही विभिन्न समाजों में इस सहचर्य के भाव को विवाह के रूप में स्थायित्व प्रदान किया है। परिवार में दांपत्य जीवन को जितना महत्त्व दिया गया है उतना अन्य किसी संबंध को नहीं। भारतीय संस्कृति में स्त्री-पुरुष के लौकिक एवं अध्यात्मिक संबंधों को दांपत्य की संज्ञा दी गई है। पति और पत्नी दांपत्य जीवन के अविभाज्य अंग है पति के बिना पत्नी निराश्रित एवं अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति एकाकी है। अतः दांपत्य जीवन को पारिवारिक जीवन का मूलाधार माना गया है। स्त्री और पुरुष का विवाह ही परिवारिक जीवन की आधारशीला है।

3.8.1 सफल दांपत्य जीवन

हिंदू परिवारों में विवाह के समय सप्तपदी के महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान के समय पति-पत्नी के पारस्परिक सखाभाव की कामना की जाती है। इसी धार्मिक संस्कार से पति-पत्नी का संबंध अटूट और जन्मजन्मांतर से माना गया है। यह संबंध तब अटूट माना जाता है जब उसमें स्थित दायित्वों या तत्वों का निर्वाह होता

है। परिवार का सुखद दांपत्य जीवन ही समाज की शक्ति का स्त्रोत है। युगानुकूल परिवर्तनों से सशक्त दांपत्य संबंधों का विघटन नहीं होता अपितु उसकी शक्ति एवं संगठन और दृढ़ होता है। दांपत्य जीवन को सफल करने में नारी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पति-पत्नी का पारस्परिक स्नेह एवं प्रेम ही दांपत्य जीवन में मृदुल मुस्कान बिखेरता है।

3.8.1.1 सहचर्य

पति-पत्नी का संबंध स्थायी, मधुर एवं रागात्मक होता है। उनके पारस्परिक सहचर्य से ही परिवार का विकास होता है। पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक होने के कारण वह आपस में बातचीत करके अपनी समस्या को सुलझा लेते हैं। दोनों के सफल जीवन के लिए परस्पर स्नेह तथा प्रेम का होना अनिवार्य है। मालती जोशी की 'संवेदना' कहानी में पति-पत्नी के बीच सहचर्य दिखाई देता है। आलोच्य कहानी के पति-पत्नी अपनी छोटी बेटी की शादी इतनी जल्दी तय होने के कारण परेशान होते हैं क्योंकि बेटा न होने के कारण अब वह दोनों ही घर में अकेले रहेंगे। अपने अकेले पन की चिंता उन्हें खाएं जाती है। जब सगाई के बाद उनकी बेटी कुछ दिनों के लिए ससुराल जाती है तो दोनों अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। यहां तक की उनके गले से खाना तक नहीं उतरता। इसीलिए पत्नी अपनी बड़ी बेटी का एक बच्चा गोद लेना चाहती है। इसपर बेटी का नकारात्मक जवाब आता है। यह बात को पति को पता चलने पर वह पड़ोस की पाल ऑटी की सोनाली को गोद लेने का प्रस्ताव उनके सामने रखते हैं। पाल ऑटी उन्हें बेटा गोद लेने के लिए कहती है। पर उन्हें अपना प्रेम सिर्फ बेटियों पर लुटाने की आदत होने के कारण वह सोनाली को गोद लेने का फैसला करतें हैं और पत्नी को समझाते हैं कि अपनी बेटी के भरे-पूरे घर से उनकी खुशियां क्यों छीन रही हो अपने मन में बचा हुआ प्यार उसे दो जिसका कोई नहीं है। और अपने पति की यह बात पत्नी भी मान जाती है उसे ऐसा लगता है जैसे, ''उनकी बातों ने मन पर चंदन का सा लेप किया। इतने दिनों से मेरे मन में धधकता ज्वालमुखी एकदम शांत हो गया था।''[27] इस प्रकार इस कहानी में पति-पत्नी के बीच सहचर्य दिखाई देता है।

'छीना हुआ सुख' कहानी में भी अनु और उसके पति के बीच सहचर्य दिखाई देता है। जब अनु के चार तोले के कंगन खो जाते हैं तो वह अपने पति की बुआ पर शक करती है। पति उसे चूप बैठने के लिए कहता है। फिर भी अनु का मन इस बात के लिए नहीं मानता। जब अचानक बुआ अपनी बेटी के घर जाने की तैयारी कर रही थी तब अनु उनके सामान की तलाशी लेती है तो उसे अपने कंगन मिल जाते हैं। बुआ के जाने के बाद वह सारी जासूसी अपने पति को बताती है तो पति उसे कहता है कि क्या कंगन की कींमत इतनी महंगी है कि जिसके लिए तुम्हें अपने घर में चोरी करनी पड़े फिर वह बुआ की मूल स्थिति स्पष्ट करता

है कि उम्र भर बुआ को अपनी बेटी के लिए कुछ करने का मौका ही नहीं मिला इसलिए बुआ अपने भतीजे के घर से चीजें चुराकर अपनी बेटी को देती है। यह बात पहले से ही अनु के पति को मालूम होने के कारण वह अपनी पत्नी को बुआ की मानसिकता के बारे में बताता है और यह बात अनु भी मान लेती है बाहर जाते हुए अनु का पति उसे कहता है, "नये बनवा लाऊंगा। यह डिजाइन मुझे पसंद नहीं है, वे जाने को मुडे फिर पलटकर बोले, 'एक बात और अनु ! बुआजी को भी पता न चले कि तुमने उनकी चोरी पकड़ ली है प्रॉमिस।' क्या जवाब देती मैं !"[28]

मालती जोशी की 'नए बंधन' कहानी में भी सहचर्य की भावना पति-पत्नी में दिखाई देती है। आलोच्य कहानी में संतोष और रमा पति-पत्नी हैं। रमा अपने मायके जाने के बाद बाढ़ में बह जाती है। यह खबर सुनकर संतोष परेशान हो जाता है। वह उसे सभी जगहों पर जाकर ढूंढ़ता है पर उसे रमा का पता नहीं चलता। एक दिन अचानक उसे लश्कर से रमा का खत आता है और उसे वापस लाने के लिए वह लश्कर जाता है। वहां उसे रमा के बिस्तर में एक छोटी लड़की भी दिखाई देती है उस बच्ची के बारे में बताते हुए रमा बताती है कि गांव से भागते हुए बच्ची की मां का साथ मिला था और उसने बच्ची रमा के पास छोड़कर जलसमाधी ली थी। रमा को खुद को बच्चे न होने के कारण वह उस बच्ची को अपनाना चाहती है और उस वक्त संतोष भी उसे कुछ नहीं कहता पर उसे बच्ची गोद लेने की बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। सिर्फ रमा बीमार होने के कारण वह उसकी बात मान लेता है। घर जाते समय रमा बच्ची को संतोष के पास देती है पर वह उससे दूर रहता है। पर सबेरे जब रमा उठती है तो देखती है, "सुबह दूधवालें की आवाज पर रमा की आंख खुली। देखा बच्ची संतोष की बगल में लेटी हुई है। उसके नन्हें-नन्हें हाथों का घेरा संतोष के गले में है और संतोष का मजबूत हाथ उसकी पीठ पर बड़ी ममता से टिका हुआ है।"[29] इस प्रकार अंत में संतोष अपनी पत्नी की जिद के खातिर उस बच्ची को अपना लेता है। दोनों एक-दूसरे की इच्छा पूर्ति के लिए अपनी इच्छाओं की बलि देते हैं।

3.8.1.2 सेवाभाव

पति-पत्नी के बीच सेवाभाव के प्रति जागरुकता आदर्श दांपत्य जीवन का लक्षण है। सेवाव्रत से ही दांपत्य जीवन में सच्चा आनंद तथा सच्ची शक्ति प्राप्त होती है। पति-पत्नी एक-दूसरे के प्रति निष्ठा, श्रद्धा, सेवा एवं सहज अनुरक्ति से दोनों सुखमय जीवनयापन करते हैं। अतः परस्पर निष्ठा तथा ईमानदारी सफल दांपत्य जीवन का आधार है। "दांपत्य जीवन का अपना सुख है जो अमीट है असीम है।"[30] भारतीय परिवारों में पति को परमेश्वर माननेवाली स्त्रियों का दांपत्य जीवन प्रायः सुखी रहता है। उनकी अपनी कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं होती उनकी इच्छा पति की इच्छा में लिन होती है।

मालती जोशी की 'साथी' कहानी में सेवाभाव दिखाई देता है। मांजी और बाबूजी अब बूढ़े हो गए हैं, अपने कलेक्टर बेटे के पास रहते हैं। फिर भी मां अनेक मुसीबतों का सामना कर अपने पति के खाने की फरमाईश पूरी करती है। ''पिछले हफ्ते से बाबूजी दो-तीन बार कचौड़ी खाने की कह चुके हैं। यों यह कोई बड़ी बात भी नहीं थी लेकिन उनकी खांसी बढ़ जाने के डर से इधर तली हुई चीजें करीब-करीब बंद सी है। मां इस बात के औचित्य को समझती न हो ऐसा भी नहीं। फिर भी बाबूजी का यों जरा-सी चीज के लिए तरसते रहना उन्हें अपार कष्ट पहुंचाता है।''[31] वह बाबूजी को ऐसा लगे की बहू अपना खयाल रखती है इसलिए वह हमेशा खाने की चीजें बहू के जरिए उन्हें पहुंचाती है। बाबूजी का बेटी को बुलाने का प्रोग्राम बेटा जब मां पर गुस्सा होता है यह बात भी वह बाबूजी से छुपाती है क्योंकि बाबूजी को जल्दी गुस्सा आता है। बेटे के मेहमान आने पर बाबूजी कुछ अनापशनाप न बक दे इसलिए वह उन्हें मंदीर ले जाती है। अंत में मां अब इस संसार से छुटकारा पाने की बात करती है तो उनके आंखों के सामने बाबूजी आ जाते हैं और उन्हें यही चिंता सताती है कि उनके बाद बाबूजी की देखभाल करनेवाला इस घर में कोई नहीं तो वह उन्हें छोड़कर अकेली कैसी जा सकती है ?

इस प्रकार इस कहानी में मां के बाबूजी के प्रति सेवाभाव के दर्शन होते हैं।

3.8.2 असफल दांपत्य जीवन

भारतीय समाज जीवन में औद्योगीकरण और नागरीकरण के कारण परिवर्तन आया है। वर्तमान युग में सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप मानवीय संबंधों में भी विघटन की स्थिति निर्माण हो गई है। पति-पत्नी के स्थापित मूल्यों में भी विघटन दिखाई देता है। तनाव, वैचारिक भिन्नता, अविश्वास, संदेह, अर्थाभाव, अनमेल विवाह, अवैध यौन संबंध, व्यसनाधीनता आदि के कारण दांपत्य संबंधों में दरारे उत्पन्न हो रही हैं। अतः आज के युग में पति-पत्नी के संबंध में कही भी पहले जैसा स्थायित्व नहीं रह गया है। असफल दांपत्य जीवन को स्पष्ट करते हुए आशा बागड़ी लिखती हैं, ''आधुनिक कालखंड़ में दांपत्य सुखी और शांति प्रदायक नहीं है उसके अनेक कारण भी हो सकते हैं। जीवन के आधुनिकीकरण से पति-पत्नी के संबंध में बिगाड़ उत्पन्न होना स्वाभाविक है।''[32]

3.8.2.1 समझदारी का अभाव

दांपत्य रूपी गाड़ी सुचारू रूप से चलने के लिए पति-पत्नी के बीच सहचर्य का होना अनिवार्य है। पति-पत्नी के एक-दूसरे को समझ न पाने के कारण दांपत्य जीवन तनावपूर्ण बनता है। आज की

शिक्षित नारी स्वाभिमानी तथा आत्मनिर्भर होने के कारण पति को पत्नी के विचारों से चलना पड़ता है। अन्यथा बात-बात में झगड़े या बहस शुरू होती है। जिससे दांपत्य जीवन कटू बनता है।

मालती जोशी की 'अंतिम संक्षेप' कहानी में यही समस्या दिखाई देती है। आलोच्य कहानी में चित्रित मनीष और महिमा पति-पत्नी है। महिमा शादी के बाद तुरंत अलग घर बसाने की बात करती है, उसकी जिद के कारण मनीष को अपनी बूढ़ी मां को अकेला छोड़कर जाना पड़ता है। महिमा चीड़-चीड़ी होने के कारण पति-पत्नी में हमेशा छोटी-मोटी बातों पर झगड़े होते रहते हैं। महिमा को मनीष का अपनी मां के पास जाना भी पसंद नहीं है। अपनी थकानभरी जिंदगी से तंग आकर मनीष जब कुछ समय के लिए अपनी मां के घर जाता है, तो महिमा उसके साथ झगड़ा शुरू करती है। एक दिन तो महिमा और मनीष का उसके ऑफीस की मिसेज भटनागर के बीच संबंध होने की बात को लेकर मनीष के साथ झगड़ा करती है। इससे बचने के लिए मनीष अपनी मां के पास आता है पर हर बार मां को महिमा के तानों का शिकार होना पड़ता है। इससे तंग आकर मां मनीष को अपने घर भेज देती है और महिमा से कहती है कि पति तालें में रखने की चीज नहीं है उसे मन की डोर से बांध के रखा जाता है। जिससे वह कहीं भी भटकता फिरे अंत में अपने ठिकाने पर ही लौट कर आता है।

इस प्रकार महिमा में समझदारी का अभाव होने के कारण उनके दांपत्य जीवन में हमेशा तनाव दिखाई देता है।

3.8.2.2 संपन्नता की चाह से उत्पन्न दरार

कभी-कभी दांपत्य जीवन में अर्थ की कमी के कारण पति-पत्नी अपनी इच्छाएं पूरी नहीं कर सकतें। इस कमी के कारण अगर पति अपनी संपन्न बनने की चाह के लिए गलत तरीके से पैसे कमाने की कोशिश करता है, तो यह बात उसकी पत्नी को अच्छी नहीं लगती है। इसी कारण दोनों में दरार निर्माण होती है।

'शुभकामना' कहानी में मालती जोशी ने इसका चित्रण किया है। सदानंद और गौरी पति-पत्नी है। सदानंद एक ईमानदार इंजिनिअर होने के कारण उसके घर की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। गौरी को हमेशा अपनी स्थिति के कारण रिश्तेदारों के सामने अपमानीत होना पड़ता है। यहां तक की उसकी मां भी उसे हमेशा उसकी गरीबी का अहसास जताया करती थी। गौरी को अपने घर मेहमानों को बुलाना भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि उनके लायक कोई भी सामान गौरी के घर में नहीं है। अपने घर की यह परिस्थिति देखकर सदानंद अपने पहचानवाले खन्ना साहब की मृत्यु के बाद उनकी सच्चाई छुपाने के लिए मंत्री जी द्वारा अपना प्रमोशन करवा लेता है। यह बात जब गौरी को पता चलती है तो वह अपने बेटे से कहती है,

"बेटे ! उसने बड़े असमंजस के साथ कहना शुरू किया, 'बेटे बड़ा अभिमान था मुझे तेरे पापा पर। भ्रष्टाचार के इस महासागर में कितने लोग हैं जो चट्टान की तरह अडिग रह पाते हैं। पर यह कमाल उन्होंने कर दिखाया था। मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि इस आदमी को कोई खरीद नहीं सकता।"[33] अपने पति पर इतना विश्वास करनेवाली गौरी को जब अपने पति के भ्रष्टाचार की बात मालूम होती है तो उन दोनों के बीच तनाव का वातावरण निर्माण होता है।

3.8.2.3 विवाहपूर्व प्रेम

दांपत्य जीवन में पति शादी से पहले किसी लड़की से प्रेम करता हो और घरवालों की मर्जी के अनुसार उसे अगर किसी और लड़की से शादी करनी पड़े तो वह अपनी पत्नी की हमेशा उपेक्षा करता है। अपने पति की सहानुभूति पत्नी को कभी नहीं मिल पाती। पति हमेशा अपनी प्रेमिका का खयाल अपने दिल में बसाने के कारण अपनी पत्नी से वह घुल-मिल नहीं पाता। इसी कारण दोनों में एक दूरी निर्माण होती है।

मालती जोशी की 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में सुनील और उसकी पत्नी इस दांपत्य का चित्रण आया है। सुनील कॉलेज के दिनों में अंजु से प्रेम करता था पर यह शादी सुनील के घरवालों को पसंद न होने के कारण सुनील को घरवालों की मर्जी से दूसरी लड़की से शादी करनी पड़ती है। यह शादी उसकी पसंद की न होने के कारण वह हमेश अपनी पत्नी की उपेक्षा करता था। सुनील के साथ उसके घरवाले भी हमेशा उसे वह सुनील के लायक न होने की उलाहना देते हैं। " 'लिवा लायेगें, तो आ जायेगे।'

'मतलब ?'

'वे क्या हमें कहीं साथ लिवा जातें हैं !'

'लेकिन क्यों ?'

'हम उनके लायक जो नहीं है।' "[34]

इस प्रकार घरवालों से तंग आकर वह चीड़-चीड़ी बन जाती है, और उसके इस स्वभाव से तंग आकर सुनील सिर्फ खाने और सोने भर के लिए घर आता है। इस प्रकार पति के विवाहपूर्व प्रेम के कारण पति-पत्नी में एक दरार निर्माण होती है।

'एक शहादत एक फलसफा' कहानी में भी यही समस्या दिखाई देती है। अनिल और रजनी पति-पत्नी है। अनिल शादी से पहले शकुन से प्यार करता था। पर शकुन की शादी उसके घरवालें अचानक कर देते हैं। इससे अनिल बहुत दुःखी हो जाता है। बाद में उसे भी अपने मां की मर्जी से रजनी के साथ शादी करनी पड़ती है। पर वह रजनी को सिर्फ मां की बहू के रूप में ही देखता है न कि अपनी पत्नी के रूप में। अनिल के दिल में शकुन के प्रति प्यार होने के कारण वह कभी रजनी को अपनाता नहीं उसे ऐसा लगता है,

"घर आकर भी तो वह आश्वस्त नहीं हो पाता कभी हमेशा ही घर से भागा-भागा रहता है। सबसे जादा डर लगता है उसे रजनी से उसकी आंखों से। उन आंखों की भाषा वह खुब समझता है उन आंखों के मौन अभियोग से वह सहम जाता है।"[35] इस प्रकार पति के विवाहपूर्व प्रेम से उसके दांपत्य जीवन में दरार निर्माण होती है।

3.8.2.4 बीमारी

दांपत्य जीवन में पति-पत्नी में से कोई एक बीमार हो तो भी दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है। 'अक्षम्य' कहानी में भी यही चित्रण हुआ है। शाम और गीता पति-पत्नी है। गीता एक असाधारण सी बीमारी के कारण ग्रस्त है। गीता की इसी बीमारी के कारण शाम के परिवार का सारा वातावरण बिगड़ जाता है। उसका छोटा बेटा मां से दूर होने के कारण दिन भर रोता रहता है। उसकी गुडीया-सी लगने वालीं तीन बेटियां अब पहचानी भी नहीं जा रही हैं। घर की सारी जिम्मेदारी बूढ़ी मां पर पड़ने के कारण वह दिन भर बड़बड़ाती रहती है। इन्हीं बातों के कारण शाम को अपने घर आने की इच्छा भी नहीं होती, "पर कहां हो पाता है यह! अम्मां की चीख-पुकार छोटे का रिरियाना, लड़कियों की धमाचौकड़ी और... और गीता का खांसना कराहना। कभी-कभी सोचता है, जिस उत्साह से घर लौटा करता था, वह घर कहां खो गया!"[36] इस प्रकार पत्नी की बीमारी के कारण असफल दांपत्य जीवन का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

3.8.2.5 वैचारिक भिन्नता

वैचारिक भिन्नता के कारण भी दांपत्य जीवन में संघर्ष निर्माण होता है। पति-पत्नी के विपरीत स्वभाव एवं विचारों के कारण दांपत्य जीवन तनाव पूर्ण बनता है। पति-पत्नी के बीच आचार, विचार, रुचि एवं स्वभावगत भिन्नता होती है। इसलिए एक-दूसरे की रुचियों एवं विचारों को समझकर स्वीकारना तथा उन्हें महत्त्व देना अत्यंत आवश्यक है। इसके अभाव के कारण दांपत्य जीवन में अनेक समस्याएं दिखाई देती हैं।

मालती जोशी की 'तौलिए' कहानी में पति-पत्नी के बीच वैचारिक भिन्नता दिखाई देती है। आलोच्य कहानी की कुमुद एक साधारण से घर में पली-बढ़ी हुई हैं और शादी के बाद सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होने के बाद वह सफाई के प्रति अत्याधिक आसक्त दिखाई देती है। पर उसके पति को ऐसी बाते बिल्कुल पसंद नहीं है। जब वह कुमुद को दिनभर सफाई के पीछे लगी हुई देखता है तो उसे गुस्सा आता है। कुमुद पार्टी में जाने के बाद मेहमानों के जिद करने पर भी वहां का कुछ नहीं खाती और इसी कारण उसका पति उस पर गुस्सा करता है। कुमुद अपनी बहन को देखने आए मेहमानों के तुरंत जाने के बाद जब

कुमुद अपनी सफाई शुरू करती है और मेहमानों में से एक औरत तभी अपनी पर्स लेने के लिए अंदर आती है। तब कुमुद की साफ-सफाई चल रहीं होती है, यह सब देखकर उसका पति उस पर बहुत गुस्सा होता है। इस प्रकार अपनी पत्नी के सफाई प्रियता के बारे में कुमुद का पति अपनी साली से कहता है - ''ये सफाई का भूत लगता है मुझे या उसे पागल बनाकर ही दम लेगा। मेरी सोशल लाइफ तो एकदम खत्म ही हो गई है। घर के लोग तक यहां आने से कतराने लगे हैं। पीने का पानी तक किसी को छुने नहीं देती। बताओ इतना लांछन और इतना अपमान कौन सहेगा। ठीक है, आपको सफाई पसंद हैं। पर दूसरे लोग भी घूरे पर नहीं रहतें अरे दो दिन को लड़का घर आता है तो घबरा जाता है। उसे भी यह नहीं बख्शती।''[37] इस प्रकार वैचारिक भिन्नता और आदतों के कारण पति-पत्नी में तनाव उत्पन्न हुआ दिखाई देता है।

'मोहभंग' कहानी में चित्रित गिरीश और सुनीता पति-पत्नी हैं। इन दोनों के बीच वैचारिक भिन्नता के कारण तनावपूर्ण वातावरण दिखाई देता है। गिरीश साधारण से घर में पला बढ़ा है और उसे भाई-बहनों के साथ मिलजुल कर रहने की आदत है, आज वह अमीर है पर उसकी सोच नहीं बदली है। तो सुनीता बचपन से अमीर घर में पली-बढ़ी होने के कारण उसके विचार अलग दिखाई देते हैं। गिरीश को अपनी छोटी बच्चियों का हॉस्टेल में रहना बिल्कुल पसंद नहीं है। पर सुनीता यह मानती है कि अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण हम अपने बच्चों को पैसे खर्च करके हॉस्टेल में रख सकते हैं। इसके बारे में वह अपनी ननंद से कहती है, ''क्यों, दूर भेज देने से ममता कम हो जाती है, दीदी और रीनू-चीनू यहां नहीं है, इसलिए तो मैं इन बच्चों के लिए समय निकाल पाती हूं। दीदी हम लोग तो संपन्न हैं। अपने बच्चों को कही भी पढ़ा सकते हैं पर इन अभागों के पास तो न साधन है न सुविधा। इन लोगों के लिए कुछ कर पाने से मन को कितनी तृप्ति मिलती है, मैं बता नहीं सकती बता भी दूं तो शायद आप समझ नहीं पाएंगी।''[38] पर अपने बच्चों को दूर रखकर दूसरों को प्यार करना गिरीश को मंजूर नहीं है। उसे अपने बच्चों के कपड़े भी किसी को देना मंजूर नहीं है। जब जाते हुए बच्चियां उसे बिलखती है तो वह बहुत दुःखी होता है। इस प्रकार दोनों के विचारों में भिन्नता होने के कारण असफल दांपत्य जीवन दिखाई देता है।

'पूजा के फूल' कहानी में चित्रित सुरेश और उमा के बीच वैचारिक भिन्नता दिखाई देती है। उमा को अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण बीमारी में भी डॉक्टर के पास जाना बिल्कुल पसंद नहीं है। लेकिन अस्पतालों में इंसान की हैसियत देखकर उसके साथ बर्ताव किया जाता है। सुरेश उसे हमेशा अस्पताल जाने के लिए कहता है। उमा का दवाइयों के खर्च के बारे में सोचना भी उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। इसी कारण उनमें हमेशा झगड़े होते हुए दिखाई देते हैं।

'सन्नाटा' कहानी में चित्रित गिरीश और उत्तरा के बीच भी हमेशा तनाव दिखाई देता है। उत्तरा

कालेज पर लेक्चरार है और सारे घर का खर्चा भी वही उठाती है। पहले तो वह अपने शौक के लिए नौकरी करती थी अब तो वह उसकी जरूरत बन गई है। गिरीश अमीर घर में पांच बहनों के बीच पला-बढ़ा होने के कारण उसे हमेशा किसी-न-किसी के सहारे की अवश्यकता होती है। एक बिजली का बिल भरने के काम से उसे बुखार आ जाता है। गिरीश ने सिर्फ वकील का बोर्ड दरवाजे पर लगाया है ताकि किसी को ऐसा न लगे की पत्नी की कमाई पर खाता है। उत्तरा का सम्मान समारोह सह न पाने के कारण गिरीश बुखार का बहाना बनाता है और उसकी सेवा में अशु भी रुक जाती है। उस समारोह में मिला हुआ सम्मान देखकर उत्तरा को लगता है, ''वह सुनती ही रही और सोचती रही काश ! अशु यहां होती उसके पापा होते। वे लोग जरा देख तो लेते कि घर के बाहर उसे कितनी इज्जत मिलती है।''[39] पर गिरीश अपनी पत्नी का सम्मान देख नहीं पाता है। इस प्रकार एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या के कारण असफल दांपत्य जीवन दिखाई देता है।

3.8.2.6 व्यक्ति स्वतंत्र्य की उपेक्षा

संसार में हर प्राणी स्वतंत्रता का आकांक्षी होता है। वह सोचने, समझने, निर्णय लेने, जानने आदि बातों के बारे में खुद निर्णय लेने का स्वातंत्र्य चाहता है। अगर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उस पर विचार थोपे जाए तो उसके मन में असंतोष निर्माण होता है। हमारी भारतीय परंपरा में तो पत्नी को पति के विचारों का पालन करना ही पड़ता है। अतः पत्नी शिक्षित और नौकरी करनेवाली होने पर भी वह स्वयं निर्णय लेने के अधिकार से वंचित होती है। अगर उसने स्वयं अपने विचार व्यक्त करने का प्रयास किया तो पति-पत्नी के बीच संघर्ष निर्माण होता है।

मालती जोशी की 'बोल री कठपुतली' कहानी में ऐसी ही अधिकार से वंचित पत्नी का चित्रण आया है। आलोच्य कहानी में अमित और आभा पति-पत्नी हैं। अमित ने आभा से शादी ही उसके सर्टिफिकेट्स देखकर की थी। जब शादी के बाद तुरंत उसके हाथों में नौकरी की ऑर्डर होने के कारण उसे अपने घर से दूर देहात में जाकर नौकरी करनी पड़ती है। उस देहात में आभा अकेली रहती है उसके बच्चे सास के पास रहते हैं। कभी-कभार घर आने पर अमित आभा को अपनी अलमारी को ताला भी लगाने नहीं देता। मां से दूर होने के कारण बच्चों को मां के प्रति अस्था बिल्कुल नहीं होती। जब अमित की मां को लकवा मारता है तो आभा का तबादला अपने शहर में किया जाता है। शहर के स्कूल में आभा अपनी लोकप्रियता का शिखर चढ़ने लगती तो अमित अपने भाई की पढ़ाई पूरी होने के कारण उसे अचानक नौकरी छोड़ने के लिए कहता है। आभा के लाख समझाने पर भी उस पर कोई असर नहीं होता। आखिर मजबूर होकर आभा को नौकरी छोड़नी पड़ती है और अमित सबकी वाह वाही पात है। ''लेकिन अमित ने यह किया और डंके की चोटी पर किया। इसके लिए खूब वाह वाही भी लुटी। सब कहते 'वाह ! इसे कहते

हैं बात का धनी। भाई पढ़ लिए तो एक दिन भी बीवी को नौकरी पर नहीं जाने दिया। नहीं तो भला लगी-लगाई नौकरी कोई छुड़वाता है और वह भी सरकारी !''[40] फिर आभा घर में बैठकर अपने आस पास के अनाथ बच्चों को पढ़ाना शुरू करती है और इसका रूपांतर बाद में एक बड़ी संस्था में होता है। फिर एक दिन अमित अपने प्रमोशन के ऑर्डर के साथ ट्रांसफर का ऑर्डर लेकर आता है। उसे देखकर आभा निराश होती है फिर भी अंत में अमित की जिद के कारण उसे अमित की बात को मानना पड़ता है। इस प्रकार शादी के बाद से अमित आभा का व्यक्ति स्वातंत्र्य छीनता है। आभा को किसी बात के लिए खुद निर्णय लेने का अधिकार अमित कभी उसे नहीं देता।

3.8.2.7 तीसरे का प्रवेश

दांपत्य जीवन में पति-पत्नी के बीच किसी तीसरे आदमी के आने से दांपत्य जीवन में असंतोष निर्माण होता है। अपनी 'रिश्ते' कहानी में मालती जोशी ने इसी समस्या को चित्रित किया है। महेश और मीरा पति-पत्नी है। महेश का दोस्त मेहता मीरा के घर पर खाने के लिए आता है। मेहता की पत्नी गांव में होने के कारण वह मीरा और महेश के घर में आता रहता था। पर बाद में जब मीरा को मेहता के साथ बहुत मिली-जुली देखकर महेश को यह बात अच्छी नहीं लगती। इसी कारण वह बात-बात पर मीरा को तने देता है। ''हां भाई, मेहता साहब तो नहीं आए आज तुम्हें मोनोटोनी से ही गुजारा करना पड़ेगा। पर चिंता मत करो दही-बड़ों के साथ पूरा न्याय होगा।''[41] इस प्रकार पति-पत्नी के बीच तीसरे आ जाने से दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है।

3.8.2.8 पति की दूरी

कभी-कभी दांपत्य जीवन में अगर पति नौकरी के कारण दूसरे शहर में हो और पत्नी अकेली गांव में रहती हो तो इस दूरी के कारण दोनों के बीच एक-दूसरे की प्रति प्रेम कम होता हुआ दिखाई देता है। इसी कारण दोनों के आपसी संबंध में एक दरार सी दिखाई देती है।

मालती जोशी की 'ऊब' कहानी में यही चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी का नरेश और सुमन पति-पत्नी है। नरेश नौकरी के कारण शहर में रहता है। इसी कारण सुमन को गांव में रहना पड़ता है। उसका पति सुमन के पास न होने के कारण सास और ननंद उसे सताती है। इस प्रकार सास और ननंद का अत्याचार और घर के कामों के कारण उसका जीवन अत्यंत उदासीन बन जाता है। नरेश भी दो-दो महीने गांव न आने के कारण सुमन का अपने पति के प्रति प्रेम भावना कम होती है। पहले जब महेश की चिट्ठी आती थी तो वह उसे पढ़ने के लिए कमरे में भाग जाती थी। अपने हाथों में होनेवाला काम छोड़कर पहले चिट्ठी पढने

की इच्छा भी सुमन को नहीं होती। इस प्रकार पति की दूरी के कारण पति-पत्नी के आपसी प्रेम में भी एक दूरी दिखाई देती है।

3.8.2.9 इच्छाओं की पूर्ति का अभाव

शादी से पहले लड़की अपने पति और उसके घर के बारे में अनेक अरमानों को सजाकर वह अपने पति के घर आती है। हर लड़की की अपने पति और उसके घर को लेकर अनेक इच्छाएं होती हैं। शादी के बाद जब उसे अपने पति की हैसियत का पता चलता है तो वह दुःखी हो जाती है। इस प्रकार इच्छाओं की पूर्ति के अभाव में दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है।

मालती जोशी की 'आरंभ' कहानी में सुरेश और विभा पति-पत्नी है। विभा साधारण से घर से आई हुई होने के कारण उसने पति के घर के बारे में बहुत सारे सपने देखे थे। शादी के बाद सुरेश की स्थिति देखकर वह दुःखी हो जाती है। सुरेश के बॉस की पार्टी में अमीर बॉस की पत्नी के रूप में अपनी बेवकूफ सहेली रंजना को देखकर वह बहुत दुःखी होती है। घर आने के बाद वह अपना सारा गुस्सा सुरेश पर निकालती है इसी कारण वह अपनी पत्नी से खिजा-खिजा रहने लगता है। इसी कारण दोनों के दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है।

3.9 दांपत्येत्तर अन्य पारिवाकि संबंध

3.9.1 पिता-पुत्र

विवाह प्रयोजन में महत्त्वपूर्ण संतानोत्पत्ति ही है। बिना संतान के मनुष्य अपूर्ण रहता है। विवाह के बाद तो केवल दांपत्य होते हैं उसमें संतान के आने के बाद ही परिवार का स्वरूप बनता है। धार्मिक विश्वासों के अनुसार पुत्र प्राप्ति आवश्यक मानी गयी है। संतान के आगमन से परिवार में स्नेह-संबंधों की वृद्धि होती है, जिससे परिवार का विकास होता है।

जिस प्रकार पिता संतान की असहायावस्था में उसका पोषण, शिक्षा, एवं सामाजिकरण द्वारा उसके व्यक्तित्व का विकास करता है। उसी प्रकार युवा होने पर संतान का कर्तव्य होता है कि वह अपने पिता का आदर सम्मान एवं पालन करे। वृद्धावस्था में उनका रक्षण एवं सेवा करें। यह दोनों प्रकार की व्यवस्थाएं पारिवारिक सुख-शांति के लिए अनिवार्य है।

3.9.1.1 असहाय पिता

जब पिता वृद्ध हो जाता है तो निश्चित ही उस अवस्था में वह पुत्र पर निर्भर रहता है। परंतु स्वार्थ

व्यक्ति को इतना अंधा बना देता है कि जिस पिता ने पुत्र का भविष्य बनाने के लिए अपना खून-पसीना एक किया हुआ होता है उस पिता के प्रति पुत्र के हृदय में स्नेह होने के बजाय उपेक्षा या कभी-कभी नफरत होती है। जो पिता के लिए असहनीय होती है। परंतु बेटे यही समझते हैं कि हर मां-बाप अपने बच्चों को पढ़ाते-लिखाते हैं तो हमारे मां-बाप ने कोई अनोखा कार्य नहीं किया।

मालती जोशी के 'अपने अपने दायरे' कहानी में ऐसे ही बेटे का चित्रण आया है। आलोच्य कहानी का योगेश बड़ी जगह पर नौकरी करता है। अपनी मां की मृत्यु पर वह अपनी अमीर पत्नी को लेकर गांव आता है। वह खुद शहर में रहता था मां-बाप से मिलने के लिए भी उसके पास समय नहीं था, पर मां की मृत्यु पर उसे घर आना ही पड़ता है। योगेश खुद बड़ी जगह पर नौकरी करता है। मां के अंतिम कार्य के समय बूढ़े बप्पा को अपनी पत्नी के ही गहने बेचकर उसका अंतिम विधि करना पड़ता है। योगेश बप्पा की मदद तो नहीं करता उल्टे पत्नी के बहकावे में आकर बप्पा से मां के गहनों के बारे में पुछता है। तो बप्पा जवाब देते हैं, '' 'बेटा' बप्पा ने उसांस भर कहा - 'तुम्हारी अम्मां के पास ऐसा कौन सा कारूं का खजाना था। जो कुछ था उसमें से कुछ तुम्हारी पढ़ाई में लगा दिया कुछ कम्मों की शादी में, कुछ चीजे बहू को दे दी, कुछ बिटिया को। फिर नाती-पोतो का पच है, मुंड़न है - हर बार कुछ न कुछ महाजन के पास देना पड़ता है। रहा सहा यह ससुरी बीमारी लील गई। अपनी करधनी और कर्णफूल कम्मों को देने के लिए कह गई थी। पर वह भी कहां हो पाया। सामने इतना बड़ा काम जो था, उसकी चीज उसके श्राद्ध में लगा दी।''[42] मां का श्राद्ध होने के बाद भी योगेश अकेले बूढ़े बप्पा को गांव छोड़कर चला जाता है। इस प्रकार असहाय पिता के रूप में बप्पा का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

3.9.2 पिता-पुत्री

हिंदू समाज में प्रायः पुत्री की उपेक्षा होती है। माता-पिता को सबसे अधिक दुःख इस बात का होता है कि जिसे अपरिचित व्यक्ति के हाथ में सदा के लिए सौंप दिया। वर्तमान युग में पढ़े-लिखे माता-पिता अब पुत्र और पुत्री में अंतर नहीं मानते क्योंकि परिवार में बेटे की अपेक्षा बेटी माता-पिता के लिए स्नेहशील होती है।

3.9.2.1 चिंताग्रस्त पिता

पिता-पुत्री संबंध में बेटी पढ़-लिख कर सारे घर की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले सकती है। वह अपने बूढ़े पिता को भी संभाल सकती है पर बेटी कमानेवाली होने पर भी पिता को उसकी शादी की चिंता सताती है वह अपनी बेटी की शादी करके अपने कर्तव्य से मुक्त होना चाहता है।

मालती जोशी की 'हमको दियो परदेस' कहानी में चित्रित बाबूजी की कंपनी में एक हादसा होने के कारण उनकी आंखें चली जाती हैं इसी कारण सारे घर की जिम्मेदारी कुसुम पर आ जाती है। वह खुद नौकरी करके अपने बीमार पिता तथा छोटे भाई की देखभाल करती है। बाबूजी कुसुम की पढ़ाई पूरी होने पर उसकी शादी करा देना चाहते हैं पर कुसुम इसके लिए माना करती है। बाबूजी को उसकी शादी की चिंता लगी रहती है। बेटे की शादी के बाद घर आई बहू के कारण बाबूजी अपनी लड़की की और चिंता करने लगते हैं। नई बहू हमेशा अपनी ननंद के बारे में बड़बड़ाती रहती थी। "अपंग जरूर थे बाबूजी, पर दुनियादार व्यक्ति थे। उनकी आंखें खराब थी पर कान तो साबूत थे घर में दिनभर जो कुछ घटता रहता, उससे वह किया 'बेटे मेरी आंखें मुंदने से पहले तुम अपने घर चली जाओं तो अच्छा है नहीं तो शायद मैं शांति से मर भी न सकुंगा।"[43] आखिर कुसुम बाबूजी की मर्जी के अनुसार शादी कर लेती है। जब बाबूजी बीमार पड़ते हैं तो कुसुम ही उनका इलाज कराती है उनकी देखभाल करती है। अंत में बाबूजी को कुसुम अपमान न सहने के कारण उनकी मौत हो जाती है। इस प्रकार बेटी की चिंता में ग्रस्त बाबूजी का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

3.9.2.2 मजबूर पिता

पिता का अपने घर पर अधिकार वह नौकरी पर होने पर ही रहता है। पिता रिटायर्ड होने के बाद वह खुद बेटे के आश्रय में रहता है। परिवार का निर्णय लेने में उसका एकाधिकार नहीं रहता सब सदस्यों की मर्जी से उसे फैसला करना पड़ता है।

मालती जोशी की 'साजिश' कहानी में ऐसे ही पिता का चित्रण आया है। आलोच्य कहानी के बाबूजी खुद नौकरी से रिटायर्ड होने के कारण पूरे घर की जिम्मेदारी उनके बेटे पर होती है। बाबूजी की बड़ी बेटी पम्मी जब अपने ससुरालवालों से झगड़ा कर मायके आ जाती है तो मायके के सारे सदस्य चिंतित हो जाते हैं। पम्मी के आ जाने से घर का खर्चा भी बढ़ता है और घर में तनाव भी दिखाई देता है। ऐसे की एक दिन पम्मी के आजाने से उसका छोटा भाई पम्मी को खरी-खोटी सुनाता है। उस के बाद पम्मी, जब बाबूजी की तरफ दीन भाव से देखती है तो बाबूजी कहते हैं कि मेरा इस घर पर कोई अधिकार नहीं है मुंझे अब बेटों की मर्जी से ही रहना पड़ेगा। अकेले बेटे की नौकरी पर यह घर ही बड़ी मुश्किल से चलता है। मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता अपने बाबूजी की यह बाते सुनकर पम्मी अपने ससुराल जाने का फैसला करती है। बाबूजी जब उसे विदा कर आते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है जैसे बेटी को अंतिम बार विदा कर आए हो। इस प्रकार अपने अधिकारों से वंचित अपनी बेटी के प्रति मजबूर पिता का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

3.9.3 माता-पुत्र

नारी की पूर्णता 'मातृत्व' में होती है। नारी के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास एवं उसके जीवन की गौरवमय परिणति मातृत्व में है। वैवाहिक आनंद का चरम सुख पुत्र प्राप्ति में ही माना गया है। "नारी के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास एवं उसके जीवन की गौरवमय परिणति मातृत्व से होती है। पुत्र को जन्म नारी अपने पति को ही पूर्नजन्म देती है। इसलिए वह जननी कहलाती है।"[44] संतानोत्पत्ति का कार्य नारी के बिना असंभव है। माता का काम निर्माण करना है। मां को मानव का सर्वश्रेष्ठ रूप माना गया है।

3.9.3.1 अटूट स्नेह

पत्नी के रूप के बाद नारी का दूसरा महत्त्वपूर्ण रूप माता का है। नारी में ममता या वात्सल्य की भावना सहज स्वाभाविक रूप में पाई जाती है। वह ममता की भावना से अलग नहीं हो सकती वात्सल्यरूपी भाव नारी का प्राकृतिक रूप होने के कारण उसे उसके व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। मां सदैव यही मंगल-कामना करती है कि जहां कहीं भी रहे उसका पुत्र सुखी रहे। मां-पुत्र के आदर्श संबंध परिवार को विकसित करते हैं।

'कोख का दर्प' कहानी में चित्रित मां का अपने बेटे के प्रति अटूट स्नेह दिखाई देता है। बड़ा परिवार और अर्थाभाव के कारण पिताजी अपनी अमीर बहन को अपना बेटा गोद देने का फैसला करते हैं। यह बात जानकर मां अपने पांचों बच्चों को अपने आंचल में छुपाती है पर आखिर पिताजी के मर्जी के अनुसार किशोर अपनी बुवा के घर गोद जाता है। अपना सबसे प्यारा बेटा बिछड़ जाने पर मां दिन भर रोती रहती है। वहां किशोर भी उस अमीर सुख-सुविधाओं से युक्त घर में मां के बिना अपने आपको अकेला महसूस करता था। घर में कभी किशोर को अच्छी लगनेवाली चीज बनती तो मां का दुःख अनावर हो जाता था। जब उसे कोई बच्चों के बारे में पूछता तो वह किशोर को भूल नहीं पाती थी। "मां का मन कभी इस हिसाब को स्वीकार नहीं कर पाया जब भी कोई बच्चों के लिए पूछता, उनके मुंह से पांच ही निकलता बाबूजी सामने होते तो आंखें तरेर देते। मां कहती 'नौ महीने पेट में रखा है, सात साल तक पाला-पोसा है उसे कैसे नकार दूं?' "[45] इस प्रकार मां और बेटे के बीच अटूट स्नेह दिखाई देता है।

3.9.3.2 लाचार मां

इस संसार में सबसे श्रेष्ठ रिश्ता मां का अपनी संतान के साथ होता है। वर्तमान युग में प्रत्येक परिवार एक शीत युद्ध से गुजर रहा है। हर आत्मीय संबंधों के बीच एक नई अर्थवत्त ने स्थान लिया है। जिसके

परिणामस्वरूप विषमता की खाई व्यक्ति में बढ़ने लगी है। अपनी संतति के साथ मां समझौते कर जीने की कोशिश करती है परंतु लड़के उसे अपमानीत करने की कोशिश करते हैं। जब बेटे संस्कारों के विरोध में वर्तन करने लगते हैं तो मां बेटे में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

मालती जोशी की 'क्षरण' कहानी में भी ऐसी ही लाचार मां का चित्रण हुआ है। विमलजी अपनी नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद अपने बेटे के घर रहने आ जाती है। पर बेटे के घर में अपनी ही मर्जी से रहनेवाली विमलजी को बेटे की मर्जी से रहना पड़ता है। अपनी बहू के गलत बर्ताव का सामना करना पड़ता है। साथ ही बहू के बर्ताव के बारे में पता होने पर भी चुप रहने वाले अपने बेटे के प्रति उन्हें बहुत गुस्सा आता है। पर अपनी लाचारी के कारण उन्हें सब सहना पड़ता है।

'मान अपमान' कहानी में भी वही चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी की मां को भी अपने बेटे के घर में बेटे के गलत व्यवहार का सामना करना पड़ता है। अपनी पत्नी के बहकावे में आकर जब बेटा खुद को ग्यारह साल तक मां से बढ़कर प्यार देकर सभांलने वाली अल्लारक्खी को नौकरानी समझकर अपनी अमीर पत्नी को उस नौकरानी के पांव छुने के लिए कहने का कारण जब मां से पूछने आता है। तब अपने बेटे का यह बर्ताव देखकर मां को बहुत दुःख होता है।

'सन्नाटा ही सन्नाटा' कहानी में चित्रित सावित्री भी अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसे बेटे के भेजे हुए पैसों पर गुजारा करना पड़ता है। बेटा दिल्ली में अपने परिवार के साथ रहता है। छुट्टियों में आने पर भी बहू अपने गरीब ससुराल में रहना पसंद नहीं करती। बेटा भी अपने भाई-बहनों के अलावा बीवी के रिश्तेंदारों की ही फिक्र करता है। बेटे और बहू का अपने प्रति बर्ताव देखकर सावित्री उन्हें कुछ नहीं कह सकती क्योंकि अगर नाराज होकर बेटा रुपए भेजना बंद कर दे तो वह अपना परिवार कैसे चलाएगी ? इस प्रकार अपने बेटे की सभी बातें मालूम होने पर सावित्री को अपनी लाचारी के कारण सबकुछ सहकर चुप रहना पड़ता है।

3.9.4 सौतेली मां-बेटा

कुछ परिवारों में पत्नी की मृत्यु के बाद उसके बच्चों को संभालने के लिए पति दूसरी शादी करता है। भारतीय संस्कृति में सौतेली मां अपने बेटे के साथ कभी अच्छा व्यवहार नहीं करती क्योंकि उसके कारण उसे अपनी सौत की याद आती है ऐसा माना जाता है। मगर कुछ परिवारों में वह अपने सौतेले बेटे के साथ अच्छा व्यवहार करें फिर भी उसे हमेशा गलत निगाहों से ही देखा जाता है। उसे अपने सौतेले बेटे के साथ गलत व्यवहार करने के लिए मजबूर किया जाता है।

'आवारा बादल' कहानी में मालती जोशी ने गोविंद और उसकी सौतेली मां के बीच के रिश्ते को चित्रित किया है। आलोच्य कहानी में गोविंद की सौतेली मां जब नई आई थी तब वह छोटे गोविंद को बहुत प्यार करती थी। वह हरदम मां का आंचल थामे चलता था। पर एक दिन गोविंद के मुंह से गंदी गाली सुनकर उसकी सौतेली मां उसे एक थप्पड मारती है। तो गोविंद की दादी और अड़ोस पड़ोस की औरते उसकी सौतेली मां को बहुत अनापशनाप बकती हैं। उनकी बातें सुनकर सौतेली मां गोविंद की तरफ से अपना ध्यान हटा लेती है। इस हादसे के बाद गोविंद और उसकी सौतेली मां के बीच दूरियां निर्माण होती हैं। इसके बारे में गोविंद सोचता है, "इतनी ठंड़ी क्यों है मां ? और उसके साथ ही ऐसा क्यों है ? सीमा-मिलिंद के साथ तो ऐसा नहीं है। वे खाना नहीं खाते तो उनके मनुहारें की जाती हैं, वे पढ़ने नहीं बैठते तो उन्हें डांट पड़ती है, कोई काबिले तारीफ काम कर देते हैं तो शाबाशी मिलती है, कोई गलती कर बैठते हैं तो कान भी खींचे जाते हैं। फिर उसे ही अपने हाल पर क्यों छोड़ दिया गया है ? आखिर क्यों ?"[46]

बुआ की कड़वी बातें सुनकर जब गोविंद घर छोड़कर जाता है तो उसकी सौतेली मां परेशान हो जाती है। अपने प्रति अपनी सौतेली मां का प्यार देखकर गोविंद को ऐसा लगता है जैसे उसका मन नाच उठा वह सोचता है कि अब उसे कोई फिक्र नहीं है क्योंकि वह अपनी मां की आंचल में अब मुंह छुपाकर रो सकता है। इस प्रकार गोविंद और उसकी सौतेली मां के बीच पहले तो दूरियां दिखाई देती हैं। पर अंत में दोनों के बीच की दूरियां खत्म होकर प्यार बढ़ता है।

3.9.5 माता-पुत्री

भारतीय पंरपरा के अनुसार पुत्री का जन्म परिवार में दुःखद माना जाता है क्योंकि पुत्री के जन्म से घर की जिम्मेदारियां बढ़ती हैं। पुत्री अपने साथ बहुत धन लेकर जाती है। इसी कारण पुत्री के जन्म से घर में किसी को जादा खुशी नहीं मिलती। वर्तमान युग में नारी-शिक्षा एवं स्वतंत्र विचार प्रणाली के कारण मां और बेटी के बीच में संस्कार भेद पाए जाते हैं। जिस चीज को मां योग्य समझें उसे बेटी योग्य कहें ऐसा हो नहीं सकता परंतु एक बात निश्चित है कि कभी-कभी बेटी बेटे की अपेक्षा मां के प्रति अधिक संवेदनपूर्ण होती है। पुत्र की अपेक्षा पुत्री का स्नेह मां के लिए जादा महत्त्वपूर्ण रहता है क्योंकि पुत्री का संबंध अंतरिक जगत से जुड़ा हुआ रहता है और मां बेटी का नाता बहुत दृढ़ होता है। मां की ममता बेटी का दुःख अनुभव करती है और बेटी भी मां के दुःख की अनुभूति को ग्रहण करती है।

3.9.5.1 स्नेहहीन संबंध

कुछ परिवारों में ऐसी मां भी पाई जाती है जो अपने पति के मरने के बाद अपनी बड़ी बेटी को नौकरी

करने के लिए मजबूर करती है और उसकी कमाई पर सारा परिवार चलाती है। मां अपनी बेटी का सिर्फ पैसे कमाने के लिए इस्तेमाल करती है, उसकी शादी के बारे में नहीं सोचती। मां अपनी बेटी का सिर्फ पैसे कमाने की मशीन के रूप में इस्तेमाल करती है।

मालती जोशी की 'आखिरी सौगात' कहानी में ऐसी ही मां का चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी की सुमन अपने पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण खुद नौकरी करके सारे घर की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है। पर उसकी मां घर की बड़ी बेटी की शादी के बारे में सोचने के बगैर अपने बेटी से तीन साल छोटे बेटे की शादी के बारे में सोचने लगती है। जब बड़ी बेटी के बारे में लोग पूछते तो कहती है, ''अरे उसे करनी होती तो अब तक कर न लेती। दिन भर तो मर्दों के बीच में ही रहती है।''[47] अपनी मां का अपने प्रति यह मत सुनकर सुमन को बहुत दुःख होता है। तो सुमन खुद अपनी शादी तय करती है और मां को उसकी शादी के लिए स्वीकृति देनी ही पड़ती है। लेकिन सुमन को उसकी शादी में आई चीजें देने के लिए वह साफ इंकार करती है इस बात से नाराज होकर सुमन विदाई के अगले दिन ही अपने पति के साथ ससुराल चली जाती है। इस प्रकार मां और बेटी के बीच में स्नेहहीनता दिखाई देती है।

'कोऊ न जाननहार' कहानी में तो मां की अजीब मानसिकता को स्पष्ट किया गया है। आलोच्य कहानी की मनीषा तो शादी के बाद आठ दिनों में ही विधवा हो जाती है। जब वह अपने पति की मृत्यु के बाद मायके आती है तो उसकी मां उसे बहुत सहारा देती है, ''दीदी जब दुर्भाग्य का लेख लेकर ससुराल से लौटी तो अम्मा ने उन्हें ऐसा सहेज लिया था जैसे वह नन्हीं बच्ची हो, अपनी ममता का ऐसा मजबूत घेरा उनके चारों ओर बना दिया था कि संवेदना प्रकट करनेवाले भी दीदी तक पहुंच नहीं पाते थे।''[48] फिर मनीषा के बाबूजी उसे पति की जगह नौकरी पर लगाते हैं। उसके बाद बाबूजी की मृत्यु हो जाती है। बाबूजी की मृत्यु के बाद मां का अपनी बेटी की तरफ देखने का नजरिया बिल्कुल बदल जाता है। वह अपने पति की मृत्यु की दोषी बेटी को मानने लगती है और दिन भर बेटी के बारे में अनापशनाप बकने लगती है। एक दिन तो वह अपनी बेटी को कहती है कि ''अब होने को क्या बाकी रहा है करमजली। पता नहीं किस कुघड़ी में अपनी सूनी मांग लेकर घर में घुसी थी कि मेरा भी सिंगार छीन गया। निगोड़ी मुझे अपने जैसी कर डाला।''[49] इस प्रकार मां अपनी बेटी से नफरत करने लगती है। वह अपनी बेटी की कमाई पर ही जीती है मगर उसे हमेशा उलाहने देती रहती है।

'अपराजिता' कहानी में भी मालती जोशी ने मां और बेटी के बीच स्नेहहीन बर्ताव का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी में अंजु के पिता की मृत्यु के बाद अंजु अपने घर की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है। वह खुद नौकरी करके अपनी बड़ी बहनों की शादी करती है तथा अपने छोटे भाइयों को पढ़ाती

है। पर अंजु की मां को अपनी बेटी की शादी की उम्र निकली जा रही है या अपनी बेटी के भी शादी के अरमान हो सकते हैं इसकी बिल्कुल फिक्र उसको नहीं है वह अपनी बेटी का इस्तेमाल सिर्फ दूध देने वाली गाय के समान करती है। अपनी मां के बारे में अंजु कहती है - "आप क्या सोचती है दीदी, मेरी अम्मा शादी की चिंता में घुली जा रही हैं। नहीं दीदी, हमारे मां-बाप बड़े परमहंस प्रवृत्ति के हैं। उन्होंने सिर्फ हम लोगों को जन्म देनेभर की चिंता की थी। शेष भार परमपिता परमेश्वर को सौंप दिया है।"[50] इस प्रकार इस कहानी में भी मां और बेटी के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते हैं।

3.9.5.2 परेशान मां

कुछ परिवारों में मां और बेटी के बीच में अटूट स्नेह होता है। जब बेटी की शादी हो जाती है तो बेटी का अपनी मां के प्रति स्नेह कम होता दिखाई देता है। वह अपने आप में ही व्यस्त दिखाई देती है। इसी कारण मां को बदला हुआ बेटी का रूप दिखाई देता है जिससे मां परेशान रहती है।

मालती जोशी की 'मेहमान' कहानी में ऐसी परेशान मां का चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी की बेटी हेम शादी के दो साल बाद सिर्फ एक महीने के लिए अपने मायके आई हुई है। मां अपनी बेटी से उसके ससुरालवालों के बारे में बातें करना चाहती है। साथ ही अपने घरवालों के बारे में अपने दिल में दबी बातें वह अपनी बेटी को बताना चाहती है पर बेटी जबसे ससुराल से आई है तब से वह अपनी भाभी और सहेलियों के साथ ही अपना समय बिताती है। अपनी बूढ़ी मां की तरफ देखने के लिए उसके पास बिल्कुल समय नहीं है। इसी कारण मां चिंतित दिखाई देती है। एक महीना पूरा होने के बाद हेम चली जाती है और मां का अपनी बेटी के पास अपना दिल हलका करने का अरमान धरा का धरा रह जाता है। इस प्रकार शादी के बाद अपनी बेटी का बदला हुआ रूप देखकर मां परेशान हो जाती है।

3.9.6 बहन-बहन

मां की तरफ वात्सल्य रूप बहनों में है। साथ ही बहन-बहन के बीच में दोस्ती भी होती है और प्यार भी। दोनों एक-दूसरे से लड़ती भी है परंतु एक-दूसरे के बीना उन्हें चैन भी नहीं आता। भाई-भाई के बीच स्नेहहीनता आ सकती है पर बहन-बहन के बीच किसी भयंकर या कटू घटनाओं के कारण ही स्नेहहीनता आती है।

मालती जोशी की 'आखिरी शर्त' कहानी में बहन-बहन के रिश्तें का चित्रण हुआ है। आलोच्य कहानी की लेखिका की दीदी जब अपनी बेटी की शादी तय होने की बात लेखिका को बताती है तो लेखिका उसपर फौरन नाराज हो जाती है क्योंकि लेखिका का मानना है कि मधु एक स्कॉलर लड़की होने

के कारण उसकी पढ़ाई पूरी होने के बाद ही उनकी शादी के बारे में सोचा जाए पर बड़ी बहन का मानना है कि लड़की अगर जादा पढ़-लिख गई तो उसके लिए लड़का ढूंढ़ने में मुश्किल होगी। इसलिए दीदी वह रिश्ता हाथ से जाने नहीं देना चाहती लेखिका के लाख समझाने पर भी दीदी अपनी बात पर कायम दिखाई देती है। इस प्रकार दो बहनों में वैचारिक भिन्नता दिखाई देती है।

3.9.7 भाई-बहन

भारतीय परिवारों में पिता के पश्चात् भाई का महत्त्वपूर्ण स्थान माना गया है। पिता के बाद वही बहनों का भरण-पोषण करता है। वैदक युग से भाई अपनी बहन को स्नेह एवं संरक्षण प्रदान करता आया है। महेंद्रकुमार जैन के मतानुसार "महाभारत कालीन समाज में बड़ी बहन को माता के समान माना गया है। जो बहन के साथ शत्रुवत व्यवहार करता है वह नरक का भागी होता है।"[51] बहन भी अपने भाइयों का पूर्ण सत्कार करती है। ससुराल जाने के बाद भाई के लिए बहन का प्रेम बढ़ता है। भारतीय परिवारों में भाई और बहन का प्रेम सात्वीक है जो वासना से कोसों दूर है।

3.9.7.1 स्वार्थी भाई

परिवार में भाई-बहन का संबंध स्नेह पूर्ण और गहरा होता है। लोगों की मनोवृत्ति के कारण या स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण शादी के बाद पत्नी के बहकावें में आकर भाई अपनी बहन के साथ गलत व्यवहार करते हैं जिससे भाई-बहन के रिश्तें में अपनेपन का अभाव दिखाई देता है।

'कोउ न जाननहार' कहानी में मालती जोशी ने स्वार्थी भाई का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी के भाई की पढ़ाई बड़ी बहन की नौकरी पर ही चलती है। भाई अपनी एम. बी. बी. एस. की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी करने के बजाय एम. डी. करने के लिए जाता है। वह उसे मिलनेवाले स्टाइपैड के रुपए मां को भेजकर उससे दुगुणा अपनी बहन से वसुल करता था। वह अपनी शादी होने के बाद ससुराल में ही जाकर रहता है। वह अपनी बूढ़ी मां और अनब्याही बहनों की जिम्मेदारी अपनी बड़ी बहन पर डालकर खुद ससुराल में ऐश से रहता है। मां की मृत्यु के बाद मां का अंतिम संस्कार बहुत पैसा खर्च करके करता है। मां के श्रादूध के दिन ही भाई बहन का सेठजी के साथ गलत रिश्ता जोड़कर अपनी बड़ी बहन का अपमान करता है। "दीदी वैसे कहना तो नही चाहिए, आजतक कभी कहा भी नहीं। पर अब यह सब अच्छा नहीं लगता। वहां तो सबको उनका व्यवहार देख-देख कर आदत सी पड़ गई है। अब तो बोलने वाले भी थककर चुप हो गए हैं, पर यहां उनका आना जरा भी अच्छा नहीं लगा। मैने जानबूझकर उन्हें कार्ड नहीं भेजा था, फिर भी वे चले आए। मेरे ससुराल वालों का तो खयाल किया होता। मैं तो शर्म से जमीन में गड़ा

जा रहा हूं।''[52] इस प्रकार अपने प्रति भाई का मत देखकर दीदी बहुत दुःखी हो जाती है। इस प्रकार जिंदगी भर अपनी बहन के कारण ही पढ़-लिखकर नौकरी लगने के बाद भाई अपनी बड़ी बहन को सबके सामने अपमानीत करता है इससे स्वार्थी भाई का चित्रण स्पष्ट होता है।

3.9.7.2 लाचार भाई

भाई की शादी के बाद घर में बहू आती है उसमें अगर समझदारी का अभाव हो तो घर में संघर्षपूर्ण वातावरण निर्माण होता है। अगर पति में पत्नी पर हुकुम चलाने की ताकत न हो तो उसे पत्नी के कारण लाचारी भरा जीवन जीना पड़ता है। और अपने सारे रिश्तें तोड़ने पड़ते हैं।

मालती जोशी की 'हमको दियो परदेश' कहानी में ऐसे लाचार भाई का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी की कुसुम की मां वह जब दस साल की थी तब ही गुजर गई थी। इसी कारण छोटे रघु की जिम्मेदारी कुसुम पर आजाती है। कुसुम ने रघु को बचपन से पाला था वह उसकी बहन नहीं मां बन गई थी। उसने खुद नौकरी करके अपने भाई और बीमार पिता की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली थी। कुसुम ने अपना सारा जीवन रघु पर केंद्रीत किया था। वह अपनी शादी का खयाल दिल से निकालकर रघु को पढ़ाती है और नौकरी भी करने लगती है। उसके बाद वह रघु की शादी कर देती है। पर रघु की पत्नी के कारण सारे घर का वातावरण दुषित हो जाता है। रघु की पत्नी के कारण रघु और कुसुम के बीच तनाव निर्माण हो जाता है। इससे कुसुम अपनी शादी कर लेती है। शादी के बाद कुसुम हर रक्षाबंधन को रघु को राखी भेजती थी पर कभी रघु का जवाब उसे नहीं आया और कुसुम रघु की पत्नी ने दी हुई कसम के कारण अपने मायके भाई के पास भी नहीं जा सकती थी। एक दिन रघु की बीमारी का खत आने के कारण वह अपने भाई को देखने जाना चाहती है पर उसे उस कसम की याद आ जाने के कारण वह अपना इरादा बदल लेती है।

3.9.8 सास-बहू

भारतीय संस्कृति में सास-बहू के लिए संकट का अवतार होती है। प्राचीन काल में बाल-विवाह की कुप्रथा के कारण अबोध बहुओं का सास द्वारा बुहत अधिक उत्पीड़न होता रहता है। ये ही पीड़ित बहुएं सास बनकर प्रतिक्रिया स्वरूप अपनी बहुओं पर वैसा ही अत्याचार करती हैं। पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि प्रत्येक सास अपनी बहू को पीड़ित करती है। इसके विपरीत कुछ सास ऐसी भी होती है जो अपनी बहू को बेटी के समान समझकर स्नेह करती है। पर बहुएं ऐसी पाई जाती हैं जो अपनी शिक्षा और अमीरी के कारण इतनी स्वार्थी होती है कि अपनी सास उन्हें अपने परिवार में अच्छी नहीं लगती।

3.9.8.1 स्नेहहीन संबंध

वर्तमान युग में बहुएं पढ़ी-लिखी शिक्षित होने के कारण उन्हें अपनी शिक्षा का गर्व होता है। उनकी धारणा होती है कि वह सिर्फ अपने पति के साथ रहें। सास का घर में होना उन्हें अच्छा नहीं लगता इसी कारण बहुएं बात-बात पर अपनी सास को ताने देती हैं। सास को अपनी मजबूरी के कारण बहू के हीन बर्ताव का शिकार होना पड़ता है। इसी कारण सांस-बहू में स्नेहहीन संबंध दिखाई देते हैं।

'अंतिम संक्षेप' कहानी में भी सास-बहू के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते हैं। आलोच्य कहानी की महिमा पढ़ी-लिखी और अमीर घर की लड़की है। महिमा शादी के तुरंत बाद अपने पति के साथ अलग रहती है। उसे अपने पति का मां के घर जाना भी पसंद नहीं था। वह हमेशा मनीष पर शक करती थी। महिमा और मनीष के बीच झगड़ा होने के बाद जब मां महिमा को समझाने जाती तो मां को ही खरी-खोटी सुननी पड़ती थी। एक दिन तो महिमा अपने पति का और उसकी ऑफिस में काम करनेवाली मिसेज भटनागर का गलत रिश्ता जोड़कर मनीष के साथ झगड़ा करती है तो वह अपनी मां के घर चला आता है। मां को यह बात समझने पर वह महिमा को समझाने जाती है तो महिमा उल्टे उन्हें ही कहती है, "आप मां है न! बेटे का पक्ष लेंगी ही, पर सही-गलत का तो खयाल कीजिए, ऐसे ही संस्कार दिए हैं आपने ?... 'तभी तो इन्हें अच्छे बुरे की तमीज नहीं रह गई है।' "[53] इस प्रकार बहू की बातें मां जी को सुननी पड़ती थी इसी कारण आखिर में तंग आकर वह अपने ही बेटे के लिए अपने घर के दरवाजे सदा के लिए बंद कर देती है।

'क्षरण' कहानी में भी यही चित्रण दिखाई देता है। आलोच्य कहानी की विमलजी जब रिटायर्ड होकर अपने बेटे के घर रहने आती है तो उन्हें बहू के गलत बर्ताव का सामना करना पड़ता है। विमलजी को घर में बैठकर बहू के बच्चे संभालने पड़ते हैं। उनकी दोपहर की चाय बहू के कारण बंद हो जाती है। उन्हें अपनी नौकरानी को अपनी मर्जी से कुछ देने का अधिकार भी उस घर में नहीं होता। पार्टी के दिन सबको मनुहार करके खिलाने की बात बहू को अच्छी नहीं लगती। जब मां बेटी के घर से संतरे आते हैं तो अपनी आदत के अनुसार पास पड़ोस वालों को संतरे बांट आती है। इस बात के लिए बहू फौरन अपनी ननंद को फोन करके विमलजी की शिकायत करती है। "मैंने कहा आपके! धन्यवाद तो दे दूं... अरे भाई आपके संतरे के लिए... आपके बागीचें के हैं न तो आपकी ही तरह मीठे होंगे... अरे अभी चखे कहां हैं। जरा कॉलनी वालों का राऊंड पूरा हो जाए। बच जाएंगे तो हम भी चख लेंगे। इससे आगे वे सुन न सकीं। दोनों हाथों में सिर थामकर बिस्तर में धंस गई। आंसुओं का एक सैलाब सा पलकों में उमड़ आया।"[54] इस प्रकार अपनी बहू के द्वारा विमलजी को बार-बार अपमानीत होना पड़ता है।

'सन्नाटा ही सन्नाटा' इस कहानी में भी सांस और बहू के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते हैं। आलोच्य कहानी में चित्रित सावित्री की बहू अपने पति के साथ दिल्ली में अपने बच्चों के साथ रहती है। वह सिर्फ छुट्टियों में अपने ससुराल आती थी। छुट्टियों में बेटा-बहू और बच्चे घर आने पर सावित्री बहुत खुश थी। बेटा फौज में होने के कारण उसे फौज का बुलावा आता है इसलिए उसे जाना पड़ता है। पर बहू भी पति के साथ जाने की जिद करती है। पर सावित्री अभी बेटों को न मिल पाने के कारण सावित्री अपनी बहू को रुकने के लिए कहती है। पर बहू यह मानने के लिए तैयार नहीं होती वह आपने पति से कहती है, "प्यार-वार तो सब ठीक है। पर यहां का काम देखा है। मेरा तो भुरकुस निकल जाएगा सुबह-श्याम रोटी बेलते, कपडे धोते हाथों में छालें पड़ जाएंगे। तुम्हारे बहाने घंटा-दो-घंटा बाहर तो निकल जाती थी। तुम्हारे पीछे तो रसोई में दफन होकर रह जाऊंगी।"[55] अपने बहू की बात सुनने के बाद सावित्री उसे रहने की जिद नहीं करती। अपने घर के बारे में बहू के खयाल जानकर सावित्री को दुःख होता है। वह अपनी बहू को जाने की इजाजत देती है। जाते वक्त अपनी बहू का नाटक सिर्फ वह देखती है आपने पोतों को प्यार करके उनको विदा करती है। उनके जाने पर सावित्री को बिल्कुल दुःख नहीं होता है।

3.9.9 ननंद-भाभी

भारतीय समाज में ननंद-भाभी का संबंध मधुर है क्योंकि दोनों प्रायः समान उम्र की होती हैं। कुछ विषम परस्थितियों में उनके संबंध कटू हो जाते हैं। ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, ध्वंसात्मकता के कारण उनके संबंध विषम बनते हैं। परिवार में ऐसी भी ननंद-भाभी पाई जाती है जो दुःख में एक-दूसरे का साथ देती है।

3.9.9.1 स्नेहहीन संबंध

ननंद का तत्पर्य है पति की कुमारी अथवा विवाहित बहन कुछ परिवारों में भाभी ननंद से रुष्ट तथा संतुष्ट दिखाई देती है। अधिकांश भाभियां भाई तथा बहन के बीच कलह के बिज बोती है। भाभी अपनी ननंद को अपनी प्रतिद्वंद्विनीय समझकर उस पर शासन करने का प्रयास करती है। 'हमको दियो परदेस' कहानी में यही रिश्ता दिखाई देता है। आलोच्य कहानी की भाभी रमा को अपनी अनब्याही ननंद घर में होना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। रमा के मायकेवालों ने पहले ही उसके जहन में ननंद के प्रति नफरत भर दी थी। "अरे सास होती तो चार-पांच साल में मर खप जाती। यह तो ननंद है, हट्टी-कट्टी है। जिंदगी भर छाती पर मूंग दलेगी। रमा से कहो, इसे जल्दी से शादी करके चलता करें।"[56] इसी कारण रमा दिन भर उसके नाम से बड़बड़ाती रहती थी। एक दिन तो रमा ने 'यह मेरी ननंद ना हुई सौत हो गई है।' यह बात कहने पर कुसुम अपनी शादी कर लेती है पर तबादला न होने के कारण उसे भाई के घर में ही रहना पड़ता है। कुसुम

ने अपने भविष्य की चिंता न करते हुए अपने भाई को बड़ा किया था पढ़ाया लिखाया था, नौकरी पर लगाया था मगर रमा को इसकी बिल्कुल पर्वाह नहीं थी। एक दिन तो रमा कुसुम को कसम दिलाती है कि 'अगर इस घर में पांव रखोगी तो भाई का मरा हुआ मुंह देखोगी। इसी कारण अंत में भाई बहुत बीमार होने पर भी कुसुम अपने भाई को देखने के लिए नहीं आती इस प्रकार भाभी के कारण भाई-बहन के बीच दूरियां निर्माण होती हैं।

3.9.10 देवर-भाभी

देवर का मतलब है पति का भाई। भारतीय संस्कृति में देवर-भाभी संबंध बड़े ही मधुर होते हैं इनमें हमेशा छेड़-छाड़ का वातावरण रहता है। भाभी मां के समान होती है तो देवर पुत्र के समान होता है।

3.9.10.1 स्नेहपूर्ण संबंध

मालती जोशी की 'कोउ न जाननहार' कहानी में भी भाभी और देवर के स्नेहपूर्ण संबंध दिखाई देते हैं। आलोच्य कहानी की मनीषा शादी के बाद आठ दिनों में ही विधवा होने के कारण अपने मायके चली आती है। मायकेवाले उसे उसके पति की जगह पर नौकरी पर लगाते हैं और वह मायके में ही रहने लगती है। पर एक दिन मनीषा अपने देवर अशोक को कपड़ों की दुकान में काम करता देखकर चकीत हो जाती है। इसका कारण पूछने पर देवर कहता है कि भाई की मौत के कारण घर में बहुत मुश्किले आ गई हैं। मां की मर्जी से मुझे शादी करनी पड़ी और सबको खिलाने के लिए यह नौकरी करने पड़ती है। और अपनी पढ़ाई मैं नाईट कालेज में जाकर करता हूं। अपने देवर की यह हालत देखकर भाभी दुःखी होती है। वह कहती है, "मालूम है पर तुम्हें उसकी चिंता क्यों हो रही है ? अभी तो तुम्हारी चिंता करने वालें मौजुद हैं। तुम्हारे दादा नहीं रहे तो क्या हुआ। भाभी तो है। मैंने सुखी हंसी हंसते हुए कहा, और अभी दस-पांच साल तक मरने का इरादा भी नहीं है।"[57] इसके बाद मनीषा अपने देवर की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है यहां तक की वह उसे नायजेरीया भेजकर उसके दोनों बच्चों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है।

3.9.11 मौसी-भतीजी

भारतीय संस्कृति में मां से बढ़कर मौसी को माना जाता है। इसलिए ही 'मां मरे मौसी रहें' की कहावत समाज में मशहुर है। इस रिश्तें की पवित्रता की याद में गढ़ी थी वह वास्तव में यथार्थ की धरातल पर सत्य है।

3.9.11.1 स्वार्थी मौसी

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो खुद संपन्न होते हैं। पर जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती उनके ऊपर वह अपना अधिकार जताते हैं। अमीर मौसी अपनी गरीब भतीजी के ऊपर अधिकार जताकर उसे एक नौकरानी के समान समझकर उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है।

मालती जोशी की 'औकात' कहानी में ऐसी स्वार्थी मौसी का चित्रण किया है। मीनू अपनी मौसी के बेटी की शादी से पहले अपनी मौसी के घर आ जाती है। पर स्वार्थी मौसी आते ही मीनू को अपने घर के कामों में लगा देती है। मीनू की गरीबी का फायदा उठाते हुए घर के और सदस्य भी उससे काम करवाते हैं। जब मौसी के लड़के-लड़कियां पिकनिक पर जाते हैं तो मौसी मीनू को घर के काम में लगाती है। उसके साथ मिठी बातें बोलकर उससे सारे काम करवाती है। बेटी की शादी के बाद भी काम करने के लिए उसे ठहरा लेती है और जब मौसाजी मीनू को आए हुए रिश्तें के बारे में बताते हैं तो मौसी उसकी गरीबी का मजाक उड़ती है। अपनी मौसी का बर्ताव देखकर मीनू बहुत दुःखी हो जाती है। इस प्रकार स्वार्थी मौसी का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

निष्कर्ष

परिवार का समग्र अध्ययन करने के बाद यह दृष्टिगोचर होता है कि व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज बनता है। समाज और राष्ट्र के लिए परिवार यह घटक बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि परिवार के अलावा इन दोनों का अस्तित्व संभव नहीं है। परिवार का उद्देश्य सिर्फ कामेच्छा की पूर्ति करना नहीं बल्कि संतानोत्पत्ति कर सृष्टिक्रम बनाए रखना यह परिवार का मुख्य उद्देश्य है। 'एक घर में और विशेषतः एक कर्ता के आधीन या संरक्षण में रहनेवाले लोगों को परिवार कहा गया है।' विभिन्न कोशकारों ने अपने मतानुसार परिवार के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार 'एक ही कुल में उत्पन्न और परस्पर घनिष्ठ संबंध रखनेवाले मनुष्यों के समुदाय को परिवार कहते हैं।' विद्वानों की विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि परिवार निकटतम् रक्तसंबंधियों का बृहत समुदाय है। मुख्यतः मृत्यु और जन्म इन दो अवस्थाओं का सुंदर समन्वय परिवार में होता है। अगर परिवार में एक सदस्य की मृत्यु होती है तो दूसरे बच्चें का जन्म उस कमी को भर देता है। समाज की अन्य संस्थाओं में परिवार यह संस्था महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मनुष्य इसमें जीवन प्राप्त करता है।

परिवार के प्रयोजनों में धर्म, अर्थ, काम, पुत्र प्राप्ति यह घटक महत्त्वपूर्ण है। 'धर्म' के द्वारा मनुष्य सामाजिक दायित्व एवं कुल परंपरा का निर्वाह करता है। 'अर्थ' द्वारा अवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

'काम' द्वारा प्रजोत्पादन करके समान एवं संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखता है। पुत्र प्राप्ति के द्वारा मनुष्य को मुक्ति मिलती है। मनुष्य का जीवन सुनियोजित तथा संगठित बनाने के लिए परिवार अनेक मौलिक एवं संगठित कार्य करता है, जिसमें सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान परिवार में कराया जाता है। तथा वात्सल्य, प्रेम तथा स्नेह की भावना से परिवार के सदस्य एक-दूसरे से जुडे रहते हैं। परिवार द्वारा सामाजिक जीवन की कल्याणकारी भावना निहित होती है। प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे को स्नेह तथा शांति पहुंचाने का तथा बलिदान करने का प्रयत्न करता है। धार्मिक उत्सवों द्वारा परिवार अपने सदस्यों का मनोरंजन करता है। परिवार के महत्त्व के बारे में सोचा जाए तो सबसे महत्त्वपूर्ण वह मनुष्य की भोजन, वस्त्र, निवास इन प्राथमिक अवश्यकताओं की पूर्ति करता है। बच्चों का पालन-पोषण समाज द्वारा ही होती है। अन्य पक्षीयों की तुलना में मानव-शिशु असहाय रहता है जिसके फलस्वरूप उसके माता-पिता पर उसका उत्तरदायित्व होता है। परिवार के अलावा अन्य कोई भी संस्था यह कार्य सही ढंग से नहीं कर सकती। साथ ही बालक की प्रथम 'पाठशाला' परिवार है, वह परिवार में जन्म लेकर मृत्यु तक अनेक बातें परिवार में ही सीखता है। इसलिए परिवार को समाज की आद्य पाठशाला कहा गया है। इस प्रकार परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। परिवार की व्यापकता एवं उदात्त भावना से केवल भारतीय नहीं विश्वसाहित्य भी प्रभावित हुआ है।

'मालती जोशी' की कहानियों में चित्रित परिवारिक जीवन का चित्रण करते हुए कहा जा सकता है कि मालती जोशी की विशेषता पारिवारिक जीवन को चित्रित करने में है। मालती जोशी प्रमुख रूप से पारिवारिक परिवेश से जुड़ी कहानीकार है। उनकी भी कहानियां परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। सरल भाषा, मनोरम शैली, मनोवैज्ञानिक मधुर स्पर्श और पारिवारिक संबंधों की मृदुल संवेदनशीलता उनकी रचनाओं के मुख्य गुण है। मालती जोशी की प्रमुख विशेषता उनकी कहानियों की सशक्तता है। उनकी सभी कहानियां पाठकों का मनोरंजन भी करती है साथ ही उन्हें उनमें अपना ही प्रतिबिंब दिख पड़ने के कारण चमत्कृत भी करती है। मालती जोशी की लगभग सभी कहानियां पारिवारिक जीवन के जीवंत चित्रण है।

मेरे अध्ययनार्थ कहानी-संग्रहों में चित्रित पारिवारिक जीवन इस प्रकार से है। मालती जोशी ने अपनी कहानियों में संयुक्त परिवार का चित्रण करते हुए सफल संयुक्त परिवार की अपेक्षा असफल संयुक्त परिवार का चित्रण अपनी कहानियों में अधिक किया है। असफल संयुक्त परिवार का चित्रण करते हुए उसके कारणों को इस प्रकार स्पष्ट किया है जिसमें - अपने पति का घर छोड़कर मायके में रहनेवाली बहन की जिम्मेदारी पिता के बाद भाइयों पर आ जाती है और बहन की जिम्मेदारी के कारण परिवार में असंतोष दिखाई देता है, तो कुछ परिवारों में बूढ़ें माता-पिता अपने बेटे के बर्ताव के कारण दुःखी हैं, परिवार का

एकाध सदस्य अगर बीमार हो तो भी परिवार में असंतोष दिखाई देता है, परिवार में जब नई बहू आती है और उसमें अगर समझदारी का अभाव हो तो पारिवारिक रिश्तों में वह दरार निर्माण करती है, संयुक्त परिवार में मां रिटायर्ड होने के बाद उसे अपने बेटे के अधिकार में रहना पड़ता है और बहू के ताने भी सुनने पड़ते हैं, अर्थाभाव की कमी के कारण संयुक्त परिवार में सभी लोगों के अवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण परिवार में तनावपूर्ण वातावरण दिखाई देता है, तो कुछ परिवारों में नई आई बहू को ससुरालवालों के द्वारा सताया जाता है, इसी कारण परिवार में संघर्ष दिखाई देता है। इस प्रकार उपरोक्त कारणों से मालती जोशी की कहानियों में असफल संयुक्त परिवार दिखाई देता है।

परिवार में पति-पत्नी प्रमुख दिखाई देते हैं। मालती जोशी ने अपनी कहानियों में सफल दांपत्य जीवन के चित्रण में सहचर्य को महत्त्वपूर्ण माना है। अगर पति-पत्नी के बीच किसी भी कारण मतभेद हो तो सहचर्य से किसी एक निर्णय पर पहुंचा जा सकता है, जिससे परिवार में झगड़ें तथा तनाव निर्माण नहीं होता। परिवार में पत्नी अगर अपने से भी जादा अपने पति की चिंता करनेवाली हो तो और घर में निर्मित समस्याओं को खुद हल कर अपने पति की सेवा करनेवाली हो तो वहां सफल दांपत्य जीवन के दर्शन होते हैं।

'असफल दांपत्य जीवन' को मालती जोशी ने इस प्रकार चित्रित किया है - दांपत्य जीवन में अगर दोनों में से किसी एक में समझदारी के अभाव के कारण परिवार में झगड़े दिखाई देते हैं, अपनी अपेक्षाओं की पूर्ति में झगड़े दिखाई देते हैं, अपनी अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए पति अगर भ्रष्टाचार का मार्ग अपनाए तो इस कारण से दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है, पति-पत्नी में अगर पति शादी के बाद भी अपनी प्रेमिका के खयालों में खोया रहें तो दोनों में तनाव निर्माण होता है, दांपत्य जीवन में अगर पति अपने अधिकार अपनी पत्नी पर जबरदस्ती लादने लगे तब भी दांपत्य जीवन में असंतोष दिखाई देता है, शादी के बाद अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति के कारण तथा दोनों में से किसी एक की बीमारी के कारण भी दांपत्य जीवन असफल बन जाता है।

दांपत्येत्तर अन्य पारिवारिक संबंधों का चित्रण मालती जोशी ने आज की वर्तमान स्थिति को सामने रखकर अपनी कहानियों में किया है 'पिता-पुत्र' के संबंध में आजकल बेटों को अपना बूढ़े पिता बोझ के समान लगने लगते हैं, उन्हें अपने पिता की बिल्कुल पर्वा नहीं होती ऐसे पिता-पुत्र के संबंध को मालती जोशी ने स्पष्ट किया है।

पिता-पुत्री के संबंध में अपनी बेटी की शादी के लिए चिंतित पिता अपनी ही बहू द्वारा किया हुआ बेटी का अपमान न सहने के कारण मौत को गले लगाता है, तो अपनी विवाहित बेटी की जिम्मेदारी न उठा

पानेवाले मजबूर बाप का चिणत्र भी दिखाई देता है।

मां-बेटा संबंध में एक तरफ मां और बेटे के अटूट स्नेह का चित्रण लेखिका ने किया है तो दूसरी ओर मां को अपनी अमीर तथा पढ़ी-लिखी पत्नी के बहकावे में आकर अपमानीत करने वाले बेटे का चित्रण भी किया है। मां अपने बेटे को अपनी जान से भी जादा प्यार करके पालती-पोसती है पर बेटा बड़ा होने के बाद अपनी मां को बोझ समझने लगता है। मां को भी अपनी लाचारी के कारण बेटे का अपमान सहकर चुप रहना पड़ता है।

सौतेली मां-बेटा संबंध के द्वारा हमरी संस्कृति में प्राचीन काल से सौतेली मां अपने सौतेले बेटे के साथ गलत बर्ताव ही करती है ऐसी मान्यता है पर कुछ परिवारों में सौतेली मां के दिल में न हो तो आस-पास के लोग उसे अपने बेटे के साथ गलत बर्ताव करने के लिए मजबूर करते हैं। इसी सौतेली मां-बेटा संबंध का चित्रण मालती जोशी ने किया है।

मां-बेटी के संबंध में बेटी मां की परछाई होती है। मां के सभी सुख-दुख एक बेटी ही समझ सकती है। वह मां की सहेली होती है पर वर्तमान युग में मां अपनी बेटी को नौकरी पर लगाती है और सारे घर की जिम्मेदारी उसी पर डाल देती है। वह अपने छोटी बेटी के भविष्य की चिंता करती है पर नौकरी करनेवाली बेटी के बारे में वह नहीं सोचती क्योंकि वह शादी करके चली गई तो घर का खर्चा कैसे चलेगा इसलिए मां अपनी कमानेवाली बेटी को सिर्फ पैसे कमानेवाला यंत्र या 'दुध देनेवाली गाय' के समान समझती है इसी कारण ऐसी मां और बेटी के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते हैं।

बहन-बहन के संबंधों का चित्रण करते हुए मालती जोशी ने दोनों के बीच वैचारिक भिन्नता को स्पष्ट किया है।

भाई-बहन के संबंधों में उनका एक-दूसरे के प्रति प्यार का रिश्ता होता है। पर कुछ भाई बहन की नौकरी तथा पैसों के द्वारा अपनी सभी जरूरते पूरी कर लेते हैं अपना काम निकलने के बाद वह अपनी बहन की तरफ पलटकर भी नहीं देखतें। तो कुछ परिवारों में अपनी पत्नी के आतंक के कारण भाई बहन के रिश्तें में एक दरार निर्माण होती है।

सास-बहू के संबंधों में सास प्राचीन काल से अपनी बहू पर अत्याचार करती आई है। पर वर्तमान युग में इसका अलग चित्रण दिखाई देता है। आज की अमीर घर की पढ़ी-लिखी बहुओं को अपनी सास घर में होना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता इसलिए वह अपनी सास को बार-बार ताने देने का मौका हाथ से नहीं जाने देती। इसलिए सास और बहू के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते है।

देवर-भाभी का रिश्ता तो नोक-झोंक का रिश्ता होता है। भाभी देवर के लिए मां के समान होती

है। मालती जोशी की कहानी में भाभी मां के समान अपने देवर की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है, अपने देवर की सभी समस्याओं को दूर करती है।

ननंद-भाभी के संबंधों में एक ही उम्र की होने के कारण सहेलियों जैसा प्यार पाया जाता है। पर मालती जोशी ने इन दोनों के बीच तनाव को चित्रित किया है। भाभी को अपनी अविवाहित ननंद अपने घर में बिल्कुल अच्छी नहीं लगती इसलिए इन दोनों के बीच स्नेहहीन संबंध दिखाई देते है।

मौसी-भतीजी के संबंधों में अमीर मौसी अपनी गरीब भतीजी का सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करती है इस प्रकार स्वार्थी मौसी का चित्रण मालती जोशी की कहानियों में हुआ है।

इस तरह से कहा जा सकता है कि पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप विघटित हो रहे हैं। इसी कारण पारिवारिक संबंध भी सीमट रहे हैं। इस युग में मानव संबंधी दृष्टिकोन में भी तेजी से परिवर्तन आया है। पारस्परिक संबंधों का आधार अब मानवीय धरातल न होकर स्वार्थ एवं आर्थिक धरातल रह गया है। व्यक्ति स्वातंत्र्य ने पारिवारिक संबंधों की मधुरता को खत्म कर दिया है। आज व्यक्ति आत्मकेंद्री बनकर अपने आप में सिमटता जा रहा है आज पारिवारिक संबंधों में परंपरागत मर्यादा का अंत एवं स्वतंत्रता का प्रादुर्भाव हो चुका है। अब संबंधों में पहले जैसा स्थायित्व नहीं रहा। व्यक्तिवाद तथा भौतिकवाद के कारण आपसी संबंध शिथिल होने लगे हैं। परिणामस्वरूप परिवार का समुचित विकास नहीं हो रहा है, इसी कारण आज संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। संतोष की बात है कि हमारे कस्बो और देहातों में संयुक्त परिवार तथा पारिवारिक संबंधों में आज भी आत्मीयता एवं सौहार्द शेष है। आज हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज और परिवार का संगठन तथा संस्थाओं के लिए के लिए प्रेरित करे।

संदर्भ संकेत

1. हरिदत्त वेदालंकार - हिंदू परिवार मीमांसा, पृ. 1
2. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, पृ. 427
3. डॉ. डी. डी. मजुमदार - कल्चर ऑफ इंडिया, पृ. 163
4. रविंद्रनाथ मुकर्जी - सामाजिक समाजशास्त्र की रूपरेखा, पृ. 260
5. आशा बागडी - प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन, पृ. 1
6. वही, पृ. 1
7. वही, पृ. 1
8. डॉ. शंभूरत्न त्रिपाठी, डॉ. कैशालनाथ शर्मा - पारिवारिक समाजशास्त्र, पृ. 32
9. बोथलिंका / लिपझिंग / संपादक एवं अनुवादक - बृहदाख्यकोपनिषद, पृ. 4/3/2
10. हरिदत्त वेदालंकार - हिंदू परिवार मीमांसा, पृ. 23
11. आशा बागडी - प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन, पृ. 3

12. आशा बागडी - प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन, पृ. 5
13. महेंद्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, पृ. 8
14. वही, पृ. 10
15. डॉ. शंभूरत्न त्रिपाठी, कैलशनाथ शर्मा - पारिवारिक समाजसास्त्र, पृ. 20
16. महेंद्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, पृ. 45
17. हरिकृष्ण रावत - समाजशास्त्र विश्वकोश, पृ. 123
18. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 56
19. वही - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 49
20. वही - आखिरी शर्त, पृ. 108
21. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 115
22. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 18
23. वही, पृ. 48
24. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 61
25. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 54
26. वही, पृ. 91
27. वही - आखिरी शर्त, पृ. 105
28. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 76
29. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 86
30. शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचना में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ. 121
31. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 106
32. आशा बागडी - प्रेमचंद-परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन, पृ. 317
33. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 40
34. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 16
35. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 101-102
36. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 18
37. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 36
38. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 81
39. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 36
40. वही, पृ. 80
41. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 41
42. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 102
43. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 48
44. महेंद्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, पृ. 141

45. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 121
46. वही, पृ. 103
47. वही - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 67
48. वही - आखिरी शर्त, पृ. 64
49. वही, पृ. 65-66
50. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 68-69
51. महेंद्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में परिवारिक चित्रण, पृ. 152
52. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 47
53. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 20
54. वही, पृ. 50
55. वही, पृ. 109
56. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 49
57. वही - आखिरी शर्त, पृ. 82